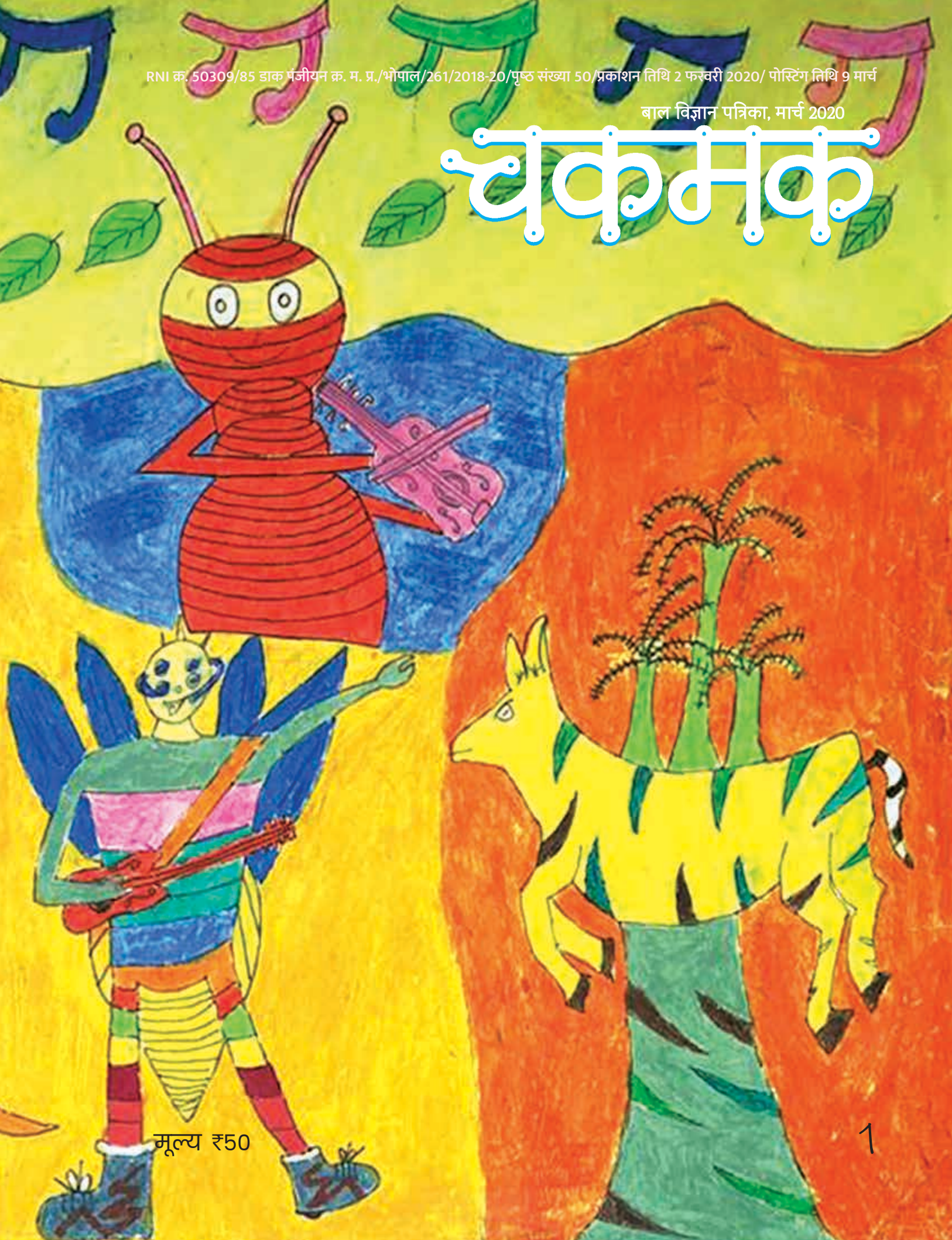


RNI क्र. 50309/85 डाक पंजीयन क्र. म. प्र./भोपाल/261/2018-20/पृष्ठ संख्या 50/प्रकाशन तिथि 2 फरवरी 2020/ पोस्टिंग तिथि 9 मार्च

बाल विज्ञान पत्रिका, मार्च 2020

चकमक



मूल्य ₹50

1



इक चिड़िया

लाल्टू
चित्र: अमृता

इक चिड़िया देखी तो उसे खयालों में रख लिया
देखा फूल तो सपनों में उसे देखता रहा
इस तरह मैं बारहा आज़ाद रहा
आस्मां में चिड़िया और बागों में फूल देखता रहा।

अंक 402 • मार्च 2020

चकमक

इस बार

- इक चिड़िया - लालू - 2
कच्छ के तैरने वाले ऊँट - रियान्तन मुखर्जी - 4
बालार - प्रीति धुर्वे - 6
तुम भी बनाओ - लैम्प - 8
हवा के गीतों पर झूमती बालियाँ - सुमेर सिंह राठौर - 10
भूलभुलैया - 13
किटू उड़नछू - हर्षिका उदासी - 14
पेशाब पर ज़िन्दा चींटियाँ - 18
तुम भी जानो - 19
पेड़ों के वासी - नेचर कॉन्ज़र्वेशन फाउण्डेशन - 20
400वें चकमक के जन्म की झलकियाँ - 22
वैज्ञानिक कैसे दिखते होंगे - 26
I love you - गायत्री - 30
मेरा पन्ना - 33
माथापच्ची - 39
चित्रपहेली - 41
तुम भी जानो - 42
मुर्गी नानी - फहीम अहमद - 44

क्यों- क्यों

हर महीने के 'क्यों-क्यों' कॉलम का सवाल हम बच्चों को ईमेल से भेजते आ रहे हैं। इस अंक से हम यह सवाल इन पन्नों में भी देंगे और हमें उम्मीद है कि तुम सब अपने-अपने जवाब हमें भेजोगे।

अगली बार के लिए सवाल है -
तुमने कई फिल्में देखी होंगी। ऐसी कौन-सी फिल्म है जिसका अन्त तुम्हें बिलकुल अच्छा नहीं लगा, और क्यों?

अपने जवाब हमें ज़रूर लिख भेजना।
हमारा ईमेल है - chakmak@eklavya.in
या फिर 9753011077 पर अपने जवाब हमें वॉट्सएप भी कर सकते हो।

आवरण चित्र: रोहित, आशुतोष, ज्ञानेंद्र, आदित्य, पीयूष, के के एकैडमी लखनऊ, उत्तर प्रदेश

सम्पादन

विनता विश्वनाथन

सह सम्पादक

कविता तिवारी

सजिता नायर

विज्ञान सलाहकार

सुशील जोशी

डिज़ाइन

कनक शशि

सलाहकार

सी एन सुब्रह्मण्यम्

शशि सबलोक

वितरण

ज्ञानक राम साहू

एक प्रति : ₹ 50

वार्षिक : ₹ 500

तीन साल : ₹ 1350

आजीवन : ₹ 6000

सभी डाक खर्च हम देंगे

एकलव्य

एकलव्य फाउण्डेशन, जाटखेड़ी, फॉर्चून कस्तूरी के पास, भोपाल, मध्य प्रदेश 462 026

फोन: +91 755 2977770 से 3 तक email - chakmak@eklavya.in, circulation@eklavya.in

www.chakmak eklavya.in, www eklavya.in

चन्दा (एकलव्य के नाम से बने) मनीऑर्डर/चेक से भेज सकते हैं।

एकलव्य भोपाल के खाते में ऑनलाइन जमा करने के लिए विवरण:

बैंक का नाम व पता - स्टेट बैंक ऑफ़ इण्डिया, महावीर नगर, भोपाल

खाता नम्बर - 10107770248

IFSC कोड - SBIN0003867

कृपया खाते में राशि डालने के बाद इसकी पूरी जानकारी

accounts.pitara@eklavya.in पर ज़रूर दें।

कच्छ के तैरने वाले ऊँट

इस्माइल जाट फकीरानी जाट समुदाय के गड़रिए हैं। वे कच्छ के अब्दसा तालुका के मोहाडी गाँव में रहते हैं। उनके 40 ऊँट समुद्र तट से दूर एक द्वीप से तैरकर अभी-अभी वापस लौटे थे। मुझे यह देखकर विश्वास ही नहीं हो रहा था कि ऊँट भी तैर सकते हैं?

ये शानदार जानवर खराई (नमकीन) ऊँट हैं। मार्च-अप्रैल से जुलाई तक की भीषण गर्मियों के दौरान ये कच्छ के समुद्री तट से दूर के द्वीपों पर लगातार तीन-चार दिनों के लिए रहते हैं। वहाँ ये मैंग्रोव (समुद्र तट के पास खारे पानी में उगने वाले पेड़-पौधों) पर गुजारा करते हैं। पानी पीने के लिए ये तीन किलोमीटर तैरकर तटीय गाँवों में आते हैं और फिर द्वीपों पर लौट जाते हैं। आम तौर पर दो पुरुष जाट मिलकर एक टीम बनाते हैं। या तो दोनों ऊँटों के साथ तैरते हैं या उनमें से एक गाँव से रोटी और पानी लाने के लिए नाव चलाकर जाता है। इनमें से एक चरवाहा ऊँट के साथ द्वीप पर ठहरता है - थोड़ा बहुत खाने के

साथ ऊँट का दूध भी पी लेता है। ऊँट का दूध उसके समुदाय के आहार का एक महत्वपूर्ण हिस्सा है।

बारिश शुरू होते ही, मालधारी अपने ऊँटों को द्वीपों पर ही छोड़ देते हैं। सितम्बर माह के बीच में वे इन्हें वहाँ से वापस लाते हैं और बारिश से हरे-भरे घास के मैदान और तटीय इलाकों में चराने ले जाते हैं।

मैंने तैरने वाले ऊँटों को पहली बार तीन साल पहले 2015 में देखा था। मैं मोहाडी के एक मालधारी की नाव में ऊँटों के साथ गया था, लेकिन सीमा सुरक्षा बल (बीएसएफ) की अनुमति के बिना द्वीप तक नहीं जा सका था। यह क्षेत्र पाकिस्तान से लगी सीमा के करीब है और समुद्र में आने-जाने वालों पर बीएसएफ चौकियों की कड़ी निगरानी रहती है।

खराई ऊँट एक विशेष किस्म के ऊँट हैं। यह अपने खानपान में अधिक लवण के आदि हो चुके हैं। इनके आहार में विभिन्न प्रकार के समुद्र तटीय पौधे, झाड़ियाँ

रियान्तन मुखर्जी / PARI
फोटो: रमेश भट्टी और रियान्तन मुखर्जी /
पीपल्स आर्काइव ऑफ इण्डिया



और खरपतवार शामिल हैं। भारत में पाए जाने वाली ऊँटों की नौ किस्मों में से ये एक हैं।

कच्छ में, दो चरवाहा समुदाय खराई ऊँट रखते हैं - रबारी और फकीरानी जाट। सामा समुदाय के लोग भी ऊँट रखते हैं, लेकिन वे खराई नहीं होते। कच्छ ऊँट उच्चेरक मालधारी संगठन के अनुसार, गुजरात में लगभग 5,000 खराई ऊँट हैं। इनमें से लगभग 2,000 खराई ऊँट तो कच्छ ज़िले में ही रहते हैं, जहाँ कई द्वीप हैं।

फकीरानी जाट के कई परिवार अब खानाबदोश नहीं हैं। उनका कहना है कि ऐसा उनके खराई ऊँटों के

लिए चराई के अभाव के कारण है। एक ज़माने में घने मेंग्रोव जंगल और हरियाली फैली हुई थी। अब ये तेज़ी-से खतम होते जा रहे हैं। साथ में बड़े चरागाहों को संरक्षित क्षेत्र के नाम पर बन्द कर दिया है और कई जगहों में तो गांडो बावर (अंग्रेज़ी बबूल या विलायती कीकर) की झाड़ियाँ उग आई हैं। खराई ऊँट के इलाकों में नमक क्यारियों और अन्य फैक्ट्री के लिए ज़मीन भी दी जा रही है। फकीरानी जाट कीमती खराई ऊँट के भविष्य को लेकर काफी चिन्तित हैं।

मैक

हिन्दी अनुवाद: मोहम्मद कमर तबरेज़

यह लेख 5 अप्रैल, 2019 को पीपल्स आर्काइव ऑफ इण्डिया की वेबसाइट पर प्रकाशित हुआ था।





बाज़ार

प्रीति धुर्वे
चित्र: उबिता

बात तब की है जब मैं दस साल की थी। एक शाम मैं बाज़ार गई थी। वैसे तो मैं सुबह से बाज़ार में ही थी। आलू, बैंगन, टमाटर, मिर्ची बीन रही थी लेकिन शाम के समय फिर सामान बीनने बाज़ार गई थी। मैं गोभी, आलू, टमाटर बीन रही थी कि मेरी दोस्त गुंजा, अरुणा ने कहा, “तुझे अच्छे वाले आलू बीनने नहीं आते क्या, जो सड़े वाले भी बीन रही है?” गुंजा बहुत अच्छे-से ताज़े-ताज़े आलू बीन रही थी। उसने कहा, “देख, ऐसे बीनते हैं।”

फिर बोली, “चलो ठेले से सेब-सन्तरा चोरी करते हैं।” मैंने कहा कि मुझे डर लगता है। ठेले पर गई तो वहाँ एक आदमी था। वह सन्तरों का मालिक था और चिल्ला-चिल्लाकर सन्तरे बेच रहा था। मैंने गुंजा से कहा, “वहाँ पर तो आदमी खड़ा

है। कैसे चोरी करेंगे?” गुंजा बोली, “वो तो वहाँ पर रहेगा ही क्योंकि उसको बेचना है। कोये ने तो बहुत सारे आम चोरी किए हैं।” “लेकिन वो तो ताज़े ही नहीं हैं।” मैंने कहा। ठेले के पास सब सड़े वाले सेब थे। गुंजा बोली, “वही तो चोरी करना है।”

मैं ठेले के पास गई और ठेले के नीचे बैठ गई। ऊपर उठकर देखती तो आदमी का मुँह उस तरफ होता। मैं हाथ ऊपर करके सन्तरा चोरी करने की कोशिश करती, पर मेरा हाथ पीछे हट जाता। डर से पूरा शरीर काँपने लगता। यह भी सोच रही थी कि कहीं वो आदमी देख ना ले, नहीं तो बहुत मार पड़ेगी। उस आदमी की नज़र जैसे ही दूसरी तरफ गई, मैंने झट-से एक सन्तरा चुरा लिया। और दौड़कर अपने दोस्तों के पास आ गई। गुंजा और अरुणा





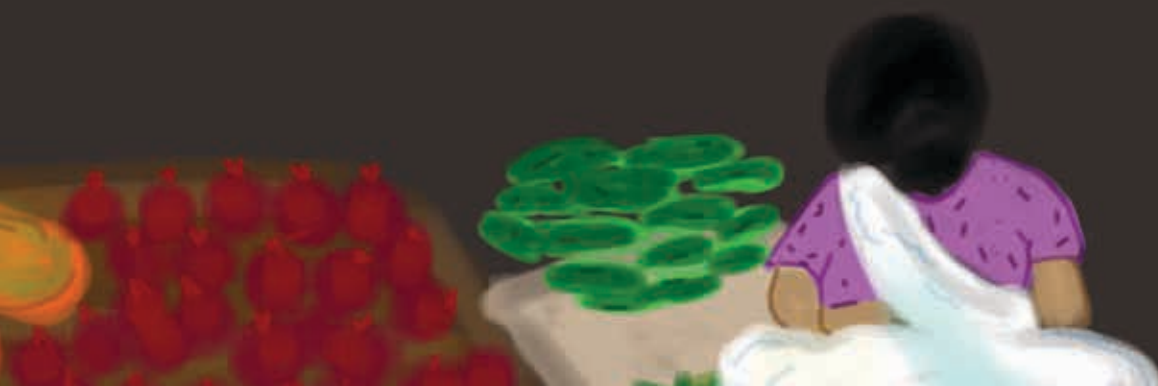
ने पूछा, “क्या हुआ?” मैंने कहा कि मैंने सन्तरा चोरी किया है। इसलिए भागकर आई हूँ। गुंजा बोली, “कितने सन्तरे चुराकर लाई है?” मैंने कहा कि एक ही सन्तरा चोरी किया है। “इतने सन्तरों में बस एक ही चोरी किया? धत् तेरे की! चल, सन्तरा छीला खाते हैं।” गुंजा बोली। मैंने सन्तरा छीला और दो पोटी (फाँक) गुंजा को दीं और दो अरुणा को। गुंजा ने कहा, “बहुत मीठा सन्तरा है। एक-दो पोटी और देना।” मैंने कहा कि अब मैं नहीं दे रही। मेरे पास अब ज़्यादा हैं ही नहीं।

थोड़ी देर बाद ठेले वालों ने अपनी-अपनी दुकानों में लाइट लगाना शुरू किया। नीचे बैठे सब्जीवाले भी अपनी दुकानों में लाइट लगाने लगे। लाइट लगते ही पूरा बाज़ार बहुत ही सुन्दर लगने लगा। आम, अनार, सन्तरे, पपीते, करेले, आलू, प्याज़ और पालक के रंग बहुत ही सुन्दर लग रहे थे। कभी सोचा ही नहीं था कि लाइट में यह इतने सुन्दर और रंग-बिरंगे लगेंगे। बाज़ार में हमारा काम होता कि कुछ भी नई चीज़ दिख जाती तो हम पोगर लेते थे। सब यही कहते कि ये मेरा है।

हम सब सहेलियाँ अलग-अलग फलों के ठेलों को छाँट लेते थे। जैसे गुंजा ज़्यादातर आम के ठेलों को

छाँटती। अरुणा लीची के ठेलों को छाँटती। दुर्गा सन्तरे के ठेलों को और मैं चैरी और टमाटर के ठेलों को छाँटती थी। मुझे टमाटर बहुत पसन्द हैं। उनको खाते ही मीठा और खट्टा लगता। ठेले वाले जो फल फेंक देते, हम उनको उठाकर खा लेते। उसके बाद हम लोग कपड़े वाले ठेलों के पास जाकर नए-नए कपड़ों को पोगराते। सबसे सुन्दर लहंगे-कुरते जहाँ भी दिखते, वहाँ गुंजा पोगर लेती। कहती कि लहंगे-कुरते को मत छाँटना, वह मैंने पसन्द करे हैं। वह मेरा ठेला होगा। दगोली तो स्कर्ट और टॉप ही पसन्द करती। वह कहती कि तुम लोग स्कर्ट-टॉप मत छाँटना। वे मेरे हैं।

सन्तरे खाने के बाद हम लोग मछलियों की दुकान पर गए। गुंजा दूर से ही चमकीले सफेद रंग की मछलियों को छाँटने लगी और कहने लगी कि ये चाँदनी मछली मेरी है। दुर्गा ने कहा कि मूँछों वाली मीन मुझे पसन्द है। यह मेरी हैं। यह खाने में भी स्वादिष्ट लगती हैं। मैंने कहा कि मुझे तो स्टार फिश अच्छी लगती है। रंग-बिरंगी मछलियाँ बड़ी खूबसूरत लग रही हैं। मछलियों को छूते ही मैं डर जाती क्योंकि पकड़ने पर वह फिसलती हैं। हम ऐसे ही हाथ लगा रहे थे तो मछली वाले ने कहा, “ऐ हटो, यहाँ से। चलो भागो।” गुंजा बोली, “अब अलग-





अलग जगह पर सब्जी बीनने चलेंगे।” मैंने पूछा कि फिर सब लोग कहाँ मिलेंगे? इकट्ठा कहाँ होंगे? दगोली ने कहा कि पूड़ी-सब्जी वाले की दुकान के पास सब इकट्ठा होंगे। मैंने कहा कि मैं उधर जा रही हूँ जहाँ पर औरतें और बच्चे-बूढ़े मैजिक में बैठकर अपनी-अपनी जगह पर जाते हैं।

थोड़ी देर बाद मैं देखती हूँ कि जहाँ पर आने के लिए बात हुई थी, वहाँ कोई भी नहीं था। गुंजा, ईश्वर, दगोली, दुर्गा सब घर चले गए थे। मैंने बाज़ार की सारी गलियाँ छान लीं, पर मुझे कोई नहीं मिला। रात के 10 बज गए थे और बाज़ार भी धीरे-धीरे उठने लगा था। मैं वापिस घर जा रही थी तो एक भैया ने मुझे लालटेन दिया और कहा कि तुम ले जाओ। पहले तो मैं डर गई कि ये आदमी मुझे लालटेन क्यों दे रहा है। लेकिन फिर सुन्दर-सा लालटेन देखकर मैं बहुत खुश हो गई। उसे लेकर चुपचाप घर जाने लगी। जाते-जाते मैंने उस आदमी को अपने मन ही मन में थैंक्यू कहा क्योंकि मेरे घर में लाइट नहीं थी। घर पहुँची तो दाई भी खुश हो गई और कहने लगीं कि अच्छा किया, तू लालटेन ले आई।

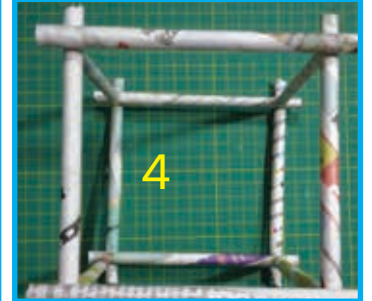
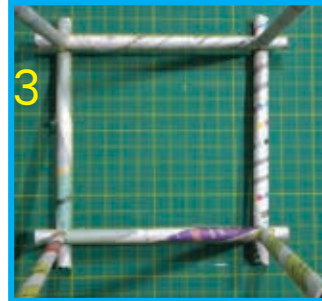


तुम्हीओ बनीओ लैम्प

जुगाड़

अखबार, ब्रुश, फेविकॉल, फेविक्विक, बटर पेपर, टिशू पेपर, किताब के बीच रखे कुछ सूखे फूल-पत्तियाँ, पानी, एक कटोरी, पेपर कटर और स्केल।

- अखबार के एक सिरे को ब्रुश के साथ मोड़ते जाओ जब तक एक रोल न बन जाए। रोल के आखिरी हिस्से को फेविकॉल से चिपका दो। ऐसे कुछ पाँच-छह रोल बना लो।
- स्केल से नापकर (चित्र-1) 15 सेंटीमीटर के 16 रोल और 11 सेंटीमीटर के आठ रोल काट लो।
- पहले 15 सेंटीमीटर वाले चार रोल लो। उनसे चौकोर बनाओ (चित्र-2)। फेविक्विक की मदद से इन्हें चिपका दो। ऐसी कुल तीन आकृतियाँ बना लो। ये हैं तुम्हारे फ्रेम।
- अब एक फ्रेम के चारों कोनों में 15 सेंटीमीटर का एक-एक रोल चिपका लो (चित्र-3)। ये तुम्हारे पिलर हो गए। दूसरे फ्रेम को इन पिलर के ऊपरी छोर पर बिठा दो और फेविक्विक से चिपका दो (चित्र-4)।



- बटर पेपर से 15 सेंटीमीटर लम्बाई और 16 सेंटीमीटर चौड़ाई के तीन आयत काट लो। साथ में 15 सेंटीमीटर लम्बाई और 12.5 सेंटीमीटर चौड़ाई के दो आयत भी काट लो।
- सूखे फूल को बटर पेपर पर रखकर (चित्र-5) टिशू पेपर के टुकड़े से ढँक दो। हमने फूल को बटर पेपर के बीच में रखा। हलके हाथों से टिशू पेपर पर ब्रुश से फेविकॉल लगाओ और फूल को चिपका दो।
- पाँचों बटर पेपर को ऐसे ही सजा दो। सुखाने के लिए कपड़े के बीच में रख हलके से प्रेस भी कर सकते हो।
- 15X16 सेंटीमीटर नाप वाला एक बटर पेपर लो और दाएँ और बाएँ छोर पर फेविकॉल लगाकर एक तरफ के दो पिलर पर चिपका दो।
- जिस तरफ तुमने अभी बटर पेपर लगाया है, अब उसके ठीक सामने वाले भाग में यही प्रक्रिया दोहराओ।
- बाकी दो तरफ भी पिलर के बाहरी हिस्सों पर फेविकॉल लगाकर 15X12.5 सेंटीमीटर वाले बटर पेपर को चिपका दो। (चित्र-6)।
- अब छोटे रोल (11 सेंटीमीटर वाले) को फ्रेम में लगे बटर पेपर के ऊपरी और निचले हिस्से पर चित्र में दिखाए तरीके से चिपका दो (चित्र-7)।
- ऊपर वाले फ्रेम पर बचा हुए बटर पेपर चिपकाना और छोटे रोल भी चिपकाना।



अब इसे मार्केट में मिलने वाले लैम्प सॉकेट के साथ लगाकर देखो। बस तैयार है तुम्हारा लैम्प।

बटर पेपर को तुम फूल-पत्तियों की जगह रंग से भी सजा सकते हो। चाहो तो इसकी जगह तुम रंगीन पतले कागज़ या फिर थोड़े मोटे कपड़ों का भी इस्तेमाल कर सकते हो। फ्रेम को भी रंग सकते हो। अपने बनाए लैम्प का चित्र हमें ज़रूर भेजना।



हवा के गीतों पर झूमती गेहूँ की बालियाँ

लेख व फोटो: सुमेर सिंह राठौर

मुझे कविताएँ बहुत पसन्द हैं। और उससे भी ज़्यादा पसन्द हैं कविताओं को नए तरीके से पढ़ना। छपी हुई कविताओं को पढ़ने से घटती हुई कविताएँ महसूस करना ज़्यादा सुखदायी मालूम होता है। या फिर पढ़ी जा चुकी कविताओं को ही घटते हुए महसूस करना। जैसे मैं किसी बन रही इमारत के पास चला जाता हूँ और महसूस करता हूँ नरेश अग्रवाल की ये कविता-

तुम हँसते हुए

काम पर बढ़ोगे

और देखते ही देखते

यह हँसी फैल जाएगी

ईंट-रेत और सीमेंट की बोरियों पर

जिस पर बैठकर

हँस रहा होगा तुम्हारा मालिक।

मैं बैठ जाता हूँ किसी छोटी-सी रेगिस्तानी पहाड़ी पर जाकर केदारनाथ अग्रवाल की इस कविता को समझने और महसूस करने के लिए-

जहाँ से चली मैं

जहाँ को गई मैं-

शहर, गाँव, बस्ती,

नदी, रेत, निर्जन,

हरे खेत, पोखर,

झुलाती चली मैं।

झुमाती चली मैं!

हवा हूँ, हवा मैं

बसन्ती हवा हूँ।

मैं ऐसे ही सुकून भरी कविताओं को महसूस करने के लिए यात्राएँ करने के सपने देखता हूँ। कोई चुप्प-सी यात्रा। बिना कुछ जाने बिना, बिना किसी से कुछ पूछे। ऐसी यात्रा जो सिर्फ मेरी हो। मेरे महसूस करने को कोई और महसूस न कर पाए, ऐसी यात्रा।

उन दिनों मैं हिमाचल में था। मई-जून के महीनों में हिमाचल जाने का पहला कारण हर किसी का यही होता है कि वहाँ ठण्डक होती है। तपती दोपहरों वाली जगह से दूर मैं ठण्डी और ऊँचाई वाली जगह पर था। जैसलमेर से धर्मकोट तक की इस यात्रा में पठानकोट तक की 24 घण्टे की यात्रा ऊँघते हुए बीती। फिर पठानकोट से निकलते-निकलते आँखें खुलनी शुरू हुई तो खोती चली गई सुन्दर कविताओं में। पतली-पतली सड़कें, दोनों तरफ छोटे-छोटे गेहूँ के खेत, ऊँचे पहाड़। मैंने बहुत सारी कविताओं को महसूस किया इस यात्रा में।



इस यात्रा में जो चीज़ सबसे अच्छी लगी, वो थी गेहूँ के खेत। छोटे-छोटे खेतों में लहराती गेहूँ की बालियाँ ऐसे लग रही थीं जैसे हवा के गीतों के साथ नाच रही हों। धर्मकोट में मैं जिस कमरे में रुका हुआ था उसके ठीक नीचे एक छोटा-सा खेत था। उसकी बालियाँ हवा में लहराती रहतीं। मैं बाहर निकलता तो बड़ी देर तक लोहे की जाली पर हाथ टिकाए उन सुनहरी बालियों को देखता रहता। सीढ़ीदार खेत बहुत छोटे-छोटे होते हैं। रास्ते भर मैं सोचता रहा कि कितने प्यारे हैं ये खेत। मैं भी घर के पास एक ऐसा ही छोटा-सा खेत बनाऊँगा जिसमें हमेशा कुछ उगता रहे।

मक्लिओडगंज के पास एक छोटी-सी झील है, डल झील। धर्मकोट से इस झील तक का पैदल रास्ता बहुत सुन्दर है। घने पेड़ों के बीच से गुज़रते हुए ऐसा महसूस होता है जैसे आँखें बन्द किए चल रहे हों। चारों तरफ शान्ति और पेड़ों के बीच से आती झींगुरों की आवाज़ें। मुझे बताया गया कि इस रास्ते के बीच में एक जगह पर पहाड़ी कुत्ते हैं, ध्यान रखना। इन पेड़ों के बीच से गुज़रते हुए जो महसूस हुआ वह मंगलेश डबराल की इस कविता से समझा जा सकता है-

कुछ देर बाद
शुरू होंगी आवाज़ें
पहले एक कुत्ता भूँकेगा पास से
कुछ दूर हिनहिनाएगा घोड़ा
बस्ती के पार सियार बोलेंगे
बीच में कहीं होगा झींगुर का बोलना
पत्तों का हिलना
बीच में कहीं होगा
रास्ते पर किसी का अकेले चलना
इन सबसे बाहर
एक बाघ के डुकरने की आवाज़
होगी मेरे गाँव में।

मैंने सुना था हिमाचल के रास्ते डरावने हैं। पर मुझे इन रास्तों से गुज़रते हुए एक बार भी डर नहीं लगा। छोटे-छोटे रास्ते। उन पर से चढ़ती-उतरती गाड़ियाँ, ढलानों पर पशुओं को हाँकती लड़कियाँ, रास्तों से बहुत नीचे बसे गाँवाँ पहाड़ों पर चढ़ते-उतरते हुए हर बार मुझे *आँखों देखी* फिल्म याद आती रही। 'मेरा सत्य वही होगा जिसे मैं महसूस करूँगा।' 'कुछ अनुभव अभी भी बाकी हैं जो कि सिर्फ सपनों में भोगे थे। जैसे कि ये सपना मुझे बार-बार आता था कि मैं हवा में तैर रहा हूँ पक्षी के जैसे।'

यहाँ के लोग भी मुझे किसी कविता-से लगे। चुपचाप अपना काम करते हुए। आते-जाते हुए। शायद नई जगह के लोग होने के कारण मुझे ऐसा लग रहा है। सड़क पर गुज़रते इन बुजुर्ग की तस्वीर देखो या खच्चर ले जाते इस आदमी को या फिर इस राहगीर को। मुझे लगा कि इसे पूछूँ कौन-से देश से हो। फिर मन ने कहा कि तुम बिना सवाल-जवाब की यात्रा के हो, तो पूछा नहीं।

दूर तक फैले ऊँचे-ऊँचे हरे और सफेद पहाड़। ऊपर की चोटियों पर गर्मियों में भी बर्फ दिख रही है। पेड़ों की लम्बी कतारों पर सुबह-शाम सूरज डूबने और उगने के रंग उतरते हैं। किसी कोने में कोई अकेला खड़ा पेड़। शाम को जब सूरज पीछे चला जाता है तो छोटी-छोटी चीज़ें निखरने लगती हैं।

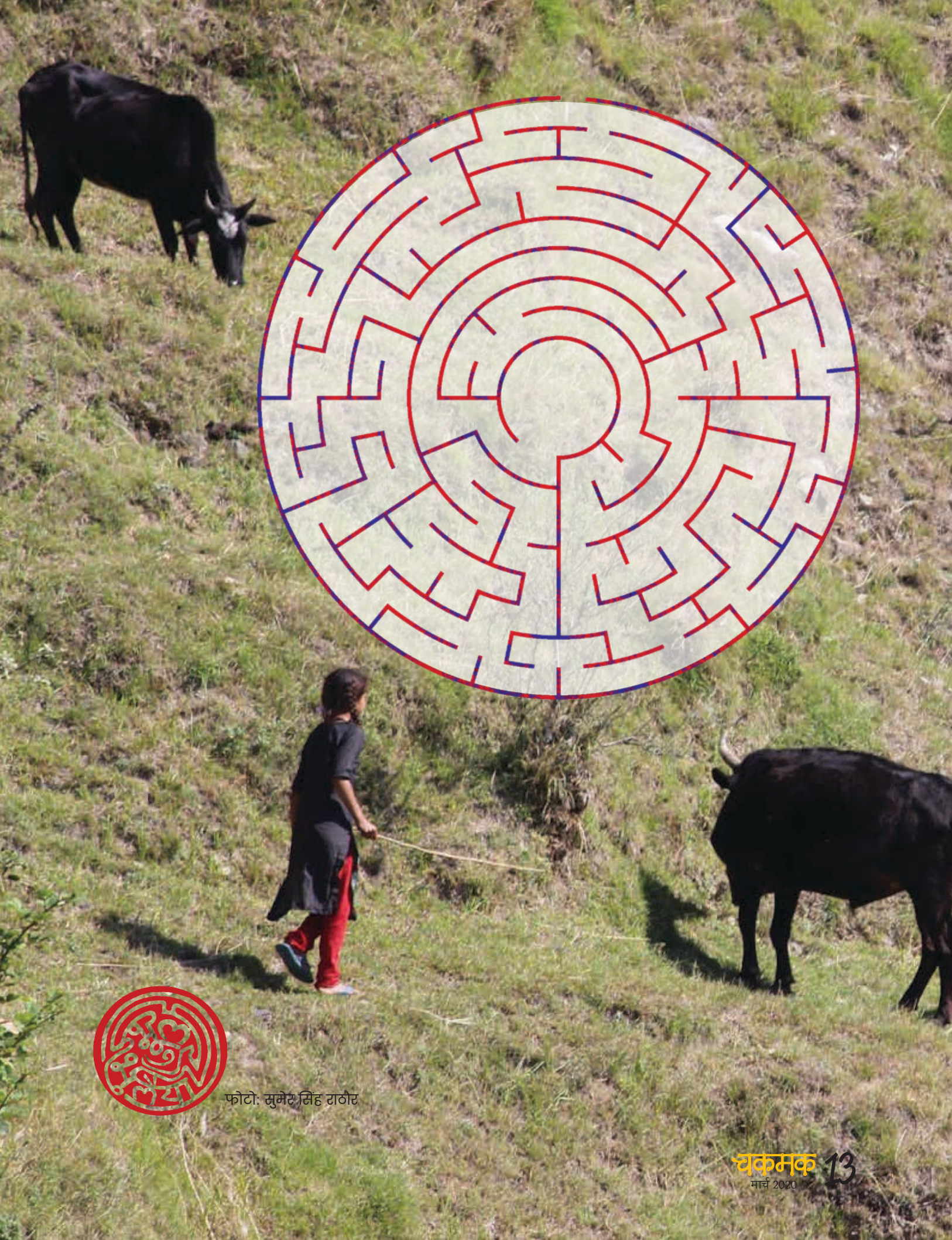
पराशर झील धर्मशाला से छह घण्टे की दूरी पर है, मण्डी के पास। मुझे इस यात्रा में गेहूँ के खेतों के बाद अगर कोई जगह सबसे अच्छी लगी, तो वो थी इस झील के पास एक पहाड़ी। यहाँ पराशर ऋषि का मन्दिर है। इस झील के अन्दर एक छोटा बगीचा है जो तैरता रहता है। मन्दिर में स्थानीय लोगों की भीड़ थी। शायद यहाँ पर्यटक बहुत कम ही आते होंगे। मन्दिर के आसपास लकड़ी से बने बहुत ही सुन्दर कमरे हैं। झील देखने के बाद पास की एक पहाड़ी पर चढ़े। वहाँ एक तार था जिसके दूसरी तरफ छोटा-सा कमरा दिख रहा था। वहाँ की हवा ऐसी थी कि बैठे रहें बस, हिलें ही नहीं। दो पहाड़ियों के बीच से आती ठण्डी हवा और आसपास दिखते सफेद बर्फ से ढँके पहाड़। भेड़ों को हाँकता

चरवाहा, पहाड़ों के बीच गोते खाते पंछी। मेरे लिए ये जगह बिलकुल वैसी ही थी कि 'कुछ अनुभव अभी भी बाकी हैं जो कि सिर्फ सपनों में भोगे थे'

मैं धर्मकोट में रुका था। इसे छोटा इज़रायल भी कहते हैं। मैक्लोडगंज से थोड़ा-सा आगे एक शान्त और छोटा-सा गांव है। यहाँ से कांगड़ा वैली और धौलाधर रेंज दिखती हैं। भीड़भाड़ से दूर शान्ति से रहने के लिए धर्मकोट बहुत ही प्यारी जगह है। मैं जिस होटल में ठहरा था, वहाँ ज्यादातर लोग तीन-चार महीनों के लिए यहाँ रुकने आए थे। यहाँ रास्तों में अकेले फिरते हुए ऐसे लगता है जैसे हर चीज़ कविता कह रही हो। पेड़ों के बीच से रोशनी बिखेरता सूरज, पत्थर पर खिलता अकेला फूल, पास में बैठा उबासी लेता कुत्ता, स्कूल में खेलते हुए थककर सीढ़ियों पर बैठे बच्चे।

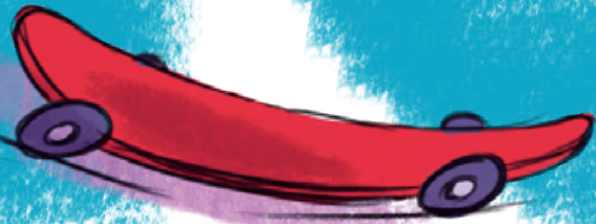
फिर से इन तस्वीरों को देखता हूँ तो ऐसे लगता है जैसे मेरे किसी प्रिय कवि की कविताएँ हैं, जिन्हें मैं बार-बार पढ़ता हूँ। इन सामने घटती कविताओं में सुख है, पास बैठकर महसूस करने का।

ॐ



फोटो: सुमेर सिंह राठीर

डर का सामना



हर्षिका उदासी

अंग्रेजी से अनुवाद: भरत त्रिपाठी

चित्र: लावण्या नायडू

यह हर्षिका उदासी की अंग्रेजी किताब *Kittu's Very Mad Day* का हिन्दी अनुवाद है।

अब तक तुमने पढ़ा:

किट्टू अपने 14 लोगों के परिवार के साथ सैर के लिए पन्ना जाता है। लौटते समय वह एक ढाबे पर छूट जाता है, जहाँ उसकी मुलाकात माधव नाम के आइसक्रीम वाले से होती है। जब किट्टू उसे बताता है कि वह खो गया है तो माधव उसे पुलिस स्टेशन ले जाने लगता है। तब किट्टू माधव को अपने पिता के डॉन होने की ऐसी कहानी बताता है कि डर के मारे वह उसे अपने घर ले आता है। अपने अजीबोगरीब परिवार से अलग होकर किट्टू को मज़ा आ रहा होता है। शुरू में माधव की बेटी मधेश्वरी यानी 'मैड' को किट्टू का आना बिलकुल अच्छा नहीं लगता। लेकिन फिर दोनों दोस्त बन जाते हैं। खजुराहो पहुँचकर किट्टू का परिवार उसे ढूँढ़ने वापिस निकलता है। माधव भी किट्टू के माता-पिता से सम्पर्क करने की कोशिश करता है, लेकिन कर नहीं पाता है। इधर किट्टू का परिवार उसे ढूँढ़ने की जद्दोजहद में पुलिस स्टेशन आ पहुँचता है और उधर किट्टू के दिमाग में खड़े होकर स्केटबोर्डिंग करने का खयाल कुलबुलाता रहता है।

अब आगे...

रंजीत चौधरी और पप्पा एक बार फिर से पुलिस स्टेशन पहुँच गए थे।

“साब, एक बच्चा गुमा है। प्लीज़ मदद करिए।” रंजीत ने ड्यूटी पर मौजूद पुलिसवाले से बड़ी एहतियात से कहा। सुबह के वक्त ऐसा लग रहा था कि कोई ज़्यादा सीनियर पुलिसवाला ड्यूटी पर था। उसके बिल्ले पर लिखा था, अवतार सिंह गिला।

“क्या हुआ? क्या तुम्हारा बच्चा खो गया है?” पिछले दिन की फाइलों को फ्रंट डेस्क पर रखने का अपना महत्वपूर्ण काम करते हुए उसने बेपरवाही से पूछा।

“नहीं, साब। इनका।” पप्पा की तरफ इशारा करते हुए रंजीत ने कहा।

पप्पा ने लड़खड़ाती हुई आवाज़ में कहा। “साब, वो सिर्फ 10 साल का है और उसका एक पैर नहीं है। वो दो बैसाखियों के सहारे चलता है। सर उसको ढूँढ़ने में प्लीज़ मेरी मदद कीजिए।”

अवतार सिंह ने पप्पा की तरफ देखा। “अपाहिज है और गुम गया? ये तो गम्भीर मामला है। क्या आपके पास उसकी कोई तस्वीर है?”

“मुझे नहीं लगता कि ये कोई मुश्किल काम है। तुम्हारे जैसे लड़के के लिए तो बिलकुल नहीं।” किट्टू के कन्धे झकझोरते हुए मैड बोली जब किट्टू स्केट पार्क से दूर पेड़ की छाँव में बैठा हुआ था।

किट्टू उसकी तरफ देखने लगा। मानो उसे वहाँ बस एक भूत जैसा साया दिखाई दे रहा था जिसके बाल दोपहर की मन्द हवा में उड़ रहे थे और जो अजीबोगरीब आवाज़ें निकाल रहा था: “ब्ली, ब्लोन, ब्लेन, ब्ला, ब्लोर...।” वो मैड को सन्देह भरी नज़रों से देखने लगा और उसने तय किया कि भले ही कोई अजनबी भूत उसके पीछा पड़ा हो पर वो परवाह नहीं करेगा। वो उस स्केटबोर्ड पर नहीं चढ़ने वाला था।

“हुँह...,” मैड वहाँ से गुस्से में पैर पटकते हुए चली गई। अजनबी भूत के चले जाने से खुश होकर किट्टू पेड़ से टिक गया और ऊँघने लगा।

“क्या तुम स्केटबोर्ड को पकड़कर बस सोते रहोगे? इससे तो अच्छा होगा कि तुम इसे वापस रख दो,” स्केटिंग आंटी बोलीं।

ये यहाँ क्या कर रही हैं, किट्टू ने सोचा। “म-म-में इसे चलाने के तरीके के बारे में ही सोच रहा था,” उसने ये दिखाने की कोशिश की कि वो सो नहीं रहा था, बल्कि गहरी सोच में डूबा हुआ था।

“इसके लिए तुम्हें खड़ा होना पड़ेगा। चलो खड़े हो!!!” स्केटिंग आंटी ने गरजकर कहा। वो भी गुस्से से वहाँ से चल दीं और किट्टू को अपने पीछे आने का इशारा किया।

किट्टू ने चुपके से देखा कि उनके हाथ में कोई छड़ी या दूसरा हथियार तो नहीं है। ऐसा कुछ दिखा तो नहीं। ये बढ़िया हुआ, कम से कम वो मार लगाकर तो किट्टू से स्केटबोर्डिंग नहीं करवाएँगी। वो इस खयाल से घरघराकर हँसना चाहता था, पर उसे लगा कि उस समय ऐसा करना ठीक नहीं होगा।

इसके अलावा, उसके पास करने के लिए और ज़रूरी काम थे। जैसे ये सोचना कि इस महिला के चंगुल से कैसे निकला जाए। वो स्केटबोर्डिंग थोड़े ही करना चाहता था, है कि नहीं? वो इसे किए बिना भी रह सकता था। तो क्या हुआ अगर वो अपना एक छोटा-सा सपना पूरा नहीं कर पाया तो?

“मुझे लगता है मैं बस बोर्ड पर बैठकर यहाँ-वहाँ घूमने से ही खुश हूँ,” स्केट पार्क पर पहुँचकर किट्टू ने स्केटिंग आंटी से कहा।

“और ऐसा क्यों?” स्केटिंग आंटी धोंस जमानेवाली महिला थीं।

“क्योंकि मैं ऐसा कह रहा हूँ,” किट्टू ने जवाब दिया।

“ओह! और आप हैं कौन वैसे?”

“मैं किट्टू हूँ, यहाँ का राजा!”

ओ...ओ... उसका डींग मारने का कोई इरादा नहीं था, कम से कम स्केटिंग आंटी के सामने तो बिलकुल नहीं। दरअसल जब भी वो गिर जाता था, रोने लगता

था, कोई उससे हमदर्दी जताता था, या जब कोई ये कहता था, “तुम ये नहीं कर पाओगे!” तो माँ उसके दोनों हाथ ऊपर उठा देती और ज़ोर-से कहती, “मैं किट्टू हूँ। यहाँ का राजा।” फिर किट्टू इसे दोहराता, और फिर दोनों हँसने लगते।

“मैं जानती हूँ कि तुम ये कर सकते हो!” स्केटिंग आंटी के पीछे से अचानक से आकर मैड ने कहा। वो दोनों अब किट्टू को उम्मीद भरी नज़रों से देखकर मुस्करा रही थीं।

किट्टू ने अपनी आँखें बन्द कर लीं और सोचा कि वो सीढ़ियाँ कैसे चढ़ता है? अपनी बैसाखियों को बड़ी मज़बूती से अपने पीछे रखता है और फिर अगली सीढ़ी चढ़ने के लिए खुद को आगे की ओर धकेलता है। अपना दायाँ पैर पहली सीढ़ी पर रख देने के बाद वो अपनी बैसाखियों को फिर इस पैर की सीढ़ी में ले आता है।

क्या यही तरीका वो यहाँ अपना सकता था? बिलकुल, अगर वो इसे स्केटबोर्ड न मानकर एक सीढ़ी माने।

“सीढ़ी। सीढ़ी। सीढ़ी। स्केटबोर्ड नहीं, सीढ़ी। सीढ़ी। सीढ़ी। स्केटबोर्ड नहीं,” किट्टू ज़ोर-ज़ोर से दोहराने लगा। फिर वो अपने दो दर्शकों के सामने आत्मविश्वास से मुस्कराया।

अपनी बैसाखियों को पीछे रखकर, उसने खुद को उठाया और अपना दायाँ पैर स्केटबोर्ड पर रखा। औरररर...फिसल गया! लेकिन धड़ाम नहीं हुआ।

वो अपने दर्शकों के ऊपर औंधने लगा जिनमें से एक ने उसे मज़बूती से पकड़ लिया, और दूसरी उसके वज़न तले गिर पड़ी।

किट्टू हाँफने लगा। उसका दिल ज़ोरों-से धड़क रहा था। लेकिन उसके दर्शक उम्मीद नहीं छोड़ रहे थे।

“किट्टू ये मत कहो कि ‘स्केटबोर्ड नहीं’। अम्मा कहती हैं कि तुम्हें उसी चीज़ के बारे में सोचना चाहिए जो तुम करने जा रहे हो। उसके बारे में नहीं जो तुम्हें नहीं करना है।” मैड बोली।

“ये सही कह रही है। फिर से कोशिश करो। सिर्फ एक कदम आगे बढ़ाना है। फिर तुम अपनी दाईं बैसाखी को स्केटबोर्ड के आगे वाले हिस्से पर रख सकते हो। उसे पैर की तरह इस्तेमाल कर सकते हो। चलो करो।”

ठीक है। किट्टू ने तैयारी तो वैसी ही की, बस इस बार उसने अपने आप से कहा – “सीढ़ी। सीढ़ी। सीढ़ी। सीढ़ी। सीढ़ी। सीढ़ी।”

उसके दिमाग में एक आवाज़ लगातार गूँज रही थी। अपनी बैसाखियों को अपने पीछे रखो किट्टू। कदम आगे बढ़ाओ...अभी!!! और अपनी दाईं बैसाखी को आगे की तरफ खींचो...अभी!!! ज़ोर लगाओ!!!



किट्टू को अपने पैर में अजीब-सी सिहरन महसूस हुई जो सीधे उसके सीने तक पहुँच गई। उसकी उँगलियाँ बिल्कुल सुन्न हो गईं और उसे समझ ही नहीं आ रहा था कि उन पर उसका कोई नियंत्रण था भी या नहीं। उसने अपने नीचे की ज़मीन को कभी इतनी तेज़ी-से गुज़रते हुए महसूस नहीं किया था। वो आज तक कभी किसी चलती हुई चीज़ पर अकेला सवार जो नहीं हुआ था। उफ!! वो कभी दौड़ा ही नहीं था।

“वाह! क्या बात है किट्टू!!!”



धड़ाड़ा

धड़ाड़ा

“आउच! मर गया!”

“क्या हो गया? उठ जाओ, कुछ खास नहीं हुआ।”
मैड बोली।

“क्या कुछ खास नहीं हुआ? मेरे...मेरे...मेरे पुट्टों
में दर्द हो रहा है!” किट्टू ने गुस्सा होते हुए कहा।

“अच्छा हुआ तुम अपने शरीर के सबसे कोमल
हिस्से के बल गिरे। अरे एक मिनट, वहाँ तो तुम्हारा
दिमाग होगा न!” मैड हँसने लगी।

किट्टू भी अपनी हँसी रोक न सका।

स्केटिंग आंटी भी उनकी हँसी में शामिल हो गई
थीं। वो भी अब उनकी हँसी की डील का हिस्सा बन
चुकी थीं।

“बहुत अच्छे, बरखुरदार! तुमने बढ़िया किया।
लेकिन अपनी ज़बान पर ज़रा काबू रखो। इस पार्क
में बकबक करने के लिए एक ही काफी है,” मैड की
तरफ देखते हुए वो बोलीं। उनकी बात सुनकर मैड
ने जीभ निकाल ली और झंपकर वहाँ से चली गई।

“तो क्या अब मैं रैंप पर भी स्केटबोर्ड चला सकता
हूँ, स्केटिंग आंटी?” किट्टू ने पूछा।

“अरे, अरे, अरे! इतनी जल्दी नहीं भई। आज तुमने
एक छोटा-सा कदम बढ़ाया है। हालाँकि ये बड़ी बात है,
लेकिन हम बहुत जल्दबाज़ी नहीं करेंगे, ठीक है? तुम
छुट्टियाँ बीतने तक तो यहीं रहोगे ना? तुम रोज़ आ
सकते हो। अब मैं अपने काम पर जा रही हूँ। तुम लोग
थोड़ी देर और स्केटबोर्डिंग कर सकते हो। प्रैक्टिस
जारी रखो!”

“चलो किट्टू एक बार और हो जाए!” मैड बोली और
बाकी की दोपहर उन दोनों ने स्केटिंग करते हुए, यहाँ
से वहाँ सनसनाते हुए और गिरते-पड़ते बिताई। किट्टू
ने आखिरी वाला सबसे अच्छा किया।

जब शाम हुई तो दोनों थककर घर लौट गए। वैसे
तो किट्टू के सपनों में स्लो मोशन में बार-बार यही
दृश्य चल रहा था कि वो वाहवाही करते हुए दर्शकों के
सामने से किसी पेशेवर स्केटबोर्डर की तरह सनसनाते
हुए स्केटिंग कर रहा है। लेकिन कोई और बात थी जो
उसे खाए जा रही थी।

जारी...



पेशाब पर ज़िन्दा चींटियाँ



ऑस्ट्रेलिया के कंगारू द्वीप पर वन्य जीवों का अध्ययन करने वाली सोफी पेटिट का सामना एक विचित्र जीव से हुआ। दरअसल शकर चींटी (*Camponotus terebrans*) नाम का यह जीव तो जाना-पहचाना था, लेकिन इसके व्यवहार ने पेटिट को अचम्भित कर दिया।


कंगारू द्वीप का वातावरण रेगिस्तानी है। सूखी ज़मीन और उस पर उगे सूखे झाड़-झंखाड़। यहाँ कंगारू खूब पाए जाते हैं। पेटिट ने देखा कि जिस जगह पर उन्होंने दो घण्टे पहले पेशाब की थी, वहाँ पर बड़ी संख्या में शकर चींटियाँ मँडरा रही हैं। इससे भी ज़्यादा अचरज की बात थी कि ये चींटियाँ उसी जगह पर कई रातों तक आती रहीं। पेटिट जानना चाहती थीं कि आखिर पेशाब में चींटियों को क्या मिल रहा है।

कुछ महीनों बाद यही सवाल मन में लिए वे अपने एक अन्य साथी को लेकर वहाँ पहुँच गईं। रासायनिक दृष्टि से देखें तो पानी के अलावा पेशाब में मुख्य रूप से यूरिया होता है। यूरिया नाइट्रोजन का एक यौगिक है और नाइट्रोजन तो सभी जीवों के लिए

अनिवार्य है। तो शोधकर्ताओं ने यूरिया के अलग-अलग घोल बनाए। किसी घोल में मनुष्य या कंगारू की पेशाब में पाया जाने वाला 2.5 प्रतिशत यूरिया मिलाया तो किसी घोल में 10 प्रतिशत। इसके अलावा शक्कर के अलग-अलग सान्द्रता वाले घोल भी बना लिए। इन अलग-अलग घोलों को रेत पर अलग-अलग स्थानों पर उड़ेलकर वह इन्तज़ार करते रहे।

पूरे एक महीने तक अवलोकन करने के बाद एक बात तो साफ थी – घोल में यूरिया की सान्द्रता जितनी अधिक होती है, शकर चींटियाँ भी उतनी ही अधिक संख्या में आती हैं। और तो और, ये चींटियाँ शक्कर के घोल की बजाय यूरिया के घोल को तरजीह देती हैं।

यूरिया को पसन्द करने तक तो ठीक था क्योंकि कई जीव यूरिया से पोषण प्राप्त करते हैं। किन्तु आश्चर्य की बात तो यह थी कि ये चींटियाँ पेशाब के सूख जाने के बाद भी रेत को खोदती रहीं। ये तो पेशाब के हलके-से दाग को भी खोदने लगती थीं। यह पहली बार है कि किसी जीव द्वारा सूखे यूरिया का उपयोग पोषण प्राप्त करने के लिए होता देखा गया है।

स्रोत फीचर्स से साभार 



हेयर लव

जूरी के बाल काफी घने और घुंघराले हैं। अमेरिका के अफ्रीकी-अमेरिकी लोगों के बाल अक्सर इस तरह के होते हैं। इनके बालों को 'ऐफ्रो' कहा जाता है। ये लोग बालों को लेकर काफी अलग होते हैं। ये अलग-अलग किस्म की विशिष्ट स्टाइल में अपने बालों को बाँधते हैं। इसके लिए इन्हें काफी धिक्कारा भी जाता है। जूरी की माँ भी रोज़ उसके बाल बाँधती थीं। फिर एक दिन ऐसा आया जब यह काम उसके पापा को करना पड़ा...

सात मिनट की इस छोटी-सी फिल्म हेयर लव ने ऑस्कर जीता है और लोगों का दिल भी। तुम्हारा मन करे तो तुम भी इसे इस लिंक पर देख सकते हो https://www.youtube.com/watch?v=kNw8V_Fkw28

कटहल से बने बैटरी



दुनिया के सबसे बदबूदार माने जाने फलों में से हैं - कटहल और डुरयैन। डुरयैन कटहल जैसा ही दिखता है लेकिन अलग परिवार का सदस्य है। इन फलों के बीज और अन्य हिस्से जो आमतौर पर फेंके जाते हैं उनसे ऑस्ट्रेलिया में कुछ वैज्ञानिकों ने एरोजेल बनाए हैं। एरोजेल खोखले और बहुत ही हलके, झिरझिरे पुर्जे होते हैं। यह सुपरकैपेसिटर नामक सैल में ऊर्जा जमाए रख सकते हैं। आज की स्थिति में ये काम महँगे कार्बन या ग्रेफीन करते हैं। सुपरकैपेसिटर बैटरियाँ बस, ट्रेन, लिफ्ट इत्यादि में काम आती हैं जहाँ एकदम से अधिक ऊर्जा वाली प्रक्रियाओं के लिए इनका इस्तेमाल होता है। कहते हैं कि कटहल और डुरयैन के अलावा बाँस और नारियल के कुछ हिस्सों से भी एरोजेल बन सकते हैं।

मैक

डाल-डाल से...

कुछ जंगलों के 90 प्रतिशत जीव उनके पेड़ों पर पाए जाते हैं, जैसे कि कुछ रेनफॉरेस्ट। मण्डवा (चन्दवा, पेड़ का छत्र या कैनपी) में और पेड़ों पर रहने वाले अन्य जीव अपनी ज्यादातर ज़िन्दगी यहीं बिताते हैं, और ज़मीन पर कम ही उतरते हैं। कुछ जीवों के लिए एक शाख ही उनकी पूरी दुनिया हो सकती है। कुछ अन्य जानवर एक से दूसरे पेड़ लाँघते हुए जीते हैं, जैसे कि तितलियाँ, गिलहरियाँ, पक्षी और बन्दर। इनकी दुनिया ज़मीन से कई मीटर ऊपर और कई वर्ग किलोमीटर में फैली हुई हो सकती है।

पेड़ों पर रहने वाले जानवरों के कुछ उदाहरण हैं - शेर पूँछ बन्दर, भारतीय विशाल गिलहरी, दक्षिणीय उड़ती छिपकली, सामान्य भारतीय वृक्षीय मेंढक और कई सारी तितलियाँ व अन्य कीट। कई सारे पौधे, काई और फफूँद भी पेड़ों पर ही रहते हैं।

पेड़ों के वासी

लिविंग हार्ड

खाने की खोज करना, दूसरे जानवरों का शिकार बनने से बचना और साथी ढूँढना, ये चुनौतियाँ तो सभी जीवों के लिए हैं।

पेड़ों पर रहने वाले जीव ये सब काम ज़मीन पर उतरे बिना भी कर लेते हैं। आखिर पत्ते, टहनियाँ, फूल, फल, छाल, रस और खाने के लिए अन्य जानवर तो यहाँ ऊपर ही मिल जाते हैं! छिपने के लिए पत्ते, दरार और बिल भी मिल जाते हैं। और जिनको अपने आप पर भरोसा है वे पीछा करने वालों को एक से दूसरे पेड़ भगा भी सकते हैं।

पेड़ों पर रहने वाले पक्षियों, स्तनधारियों, साँप, कीड़ों और अन्य जानवरों को पतली-

मोटी, आड़ी-टेढ़ी और चिकनी डालों पर बिना पतियों या टहनियों से खरोंच लगे या उलझे चलना पड़ता है। उन्हें विभिन्न आकार वाले और खुरदुरे तनों वाले पेड़ों पर चढ़ना-उतरना पड़ता है। कभी-कभी तो मण्डवे में लम्बे फासले तय करने पड़ते हैं। मण्डवा से बिना गिरे खाना-पीना और सोना पड़ता है।

पेड़ों पर रहने वाले जीवों का अवलोकन करना, उनका अध्ययन करना हमेशा आसान नहीं होता। इस काम में पेड़ पर चढ़ने का हुनर काम आता है। रस्सी, पुली से मदद मिलती है। कुछ रेनफॉरेस्ट में तो मण्डवा पर पुल और पैदल चलने के लिए रास्ते भी बनाए गए हैं।



nature
conservation
foundation

science for conservation

फील्ड डायरी के लिए

चलो, तुम्हारे मोहल्ले के कुछ पेड़ों की ऊँचाई पता करते हैं।

जुगाड़ - एक मीटर लम्बा रूलर या लकड़ी, एक दोस्त और पार्क या अन्य कोई ऐसी जगह जहाँ कुछ पेड़ हों और साथ में चलती गाड़ियों से कोई खतरा न हो।

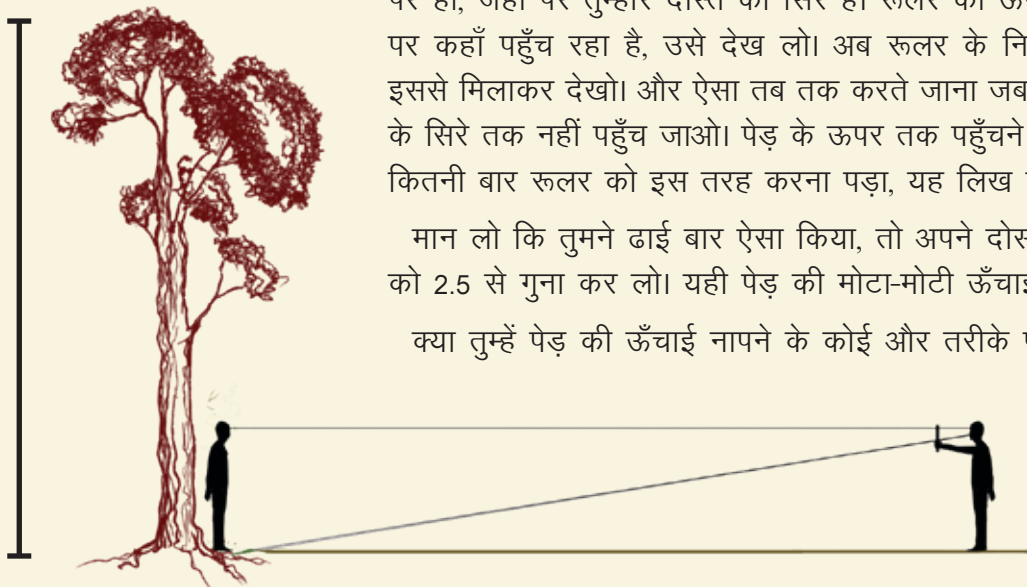
अपने दोस्त को किसी पेड़ के नीचे खड़ा करो।

अब रूलर को पकड़े अपनी बाँह को आगे बढ़ाओ और अपने दोस्त के पीछे चलते जाओ। उस जगह रुकना जहाँ रूलर का ऊपरी सिरा तुम्हारे दोस्त के सिर की लाइन में हो और उसका निचला सिरा उसके पैरों की लाइन में। यानी कि तुम्हारा दोस्त रूलर की लम्बाई से ढँका हो (चित्र देखो)।

रूलर को ऐसे ऊपर करो कि उसका निचला सिरा पेड़ की उस जगह पर हो, जहाँ पर तुम्हारे दोस्त का सिर है। रूलर का ऊपरी सिरा पेड़ पर कहाँ पहुँच रहा है, उसे देख लो। अब रूलर के निचले सिरे को इससे मिलाकर देखो। और ऐसा तब तक करते जाना जब तक तुम पेड़ के सिरे तक नहीं पहुँच जाओ। पेड़ के ऊपर तक पहुँचने के लिए तुम्हें कितनी बार रूलर को इस तरह करना पड़ा, यह लिख लो।

मान लो कि तुमने ढाई बार ऐसा किया, तो अपने दोस्त की लम्बाई को 2.5 से गुना कर लो। यही पेड़ की मोटा-मोटी ऊँचाई है।

क्या तुम्हें पेड़ की ऊँचाई नापने के कोई और तरीके पता हैं?



प्रतियोगिता

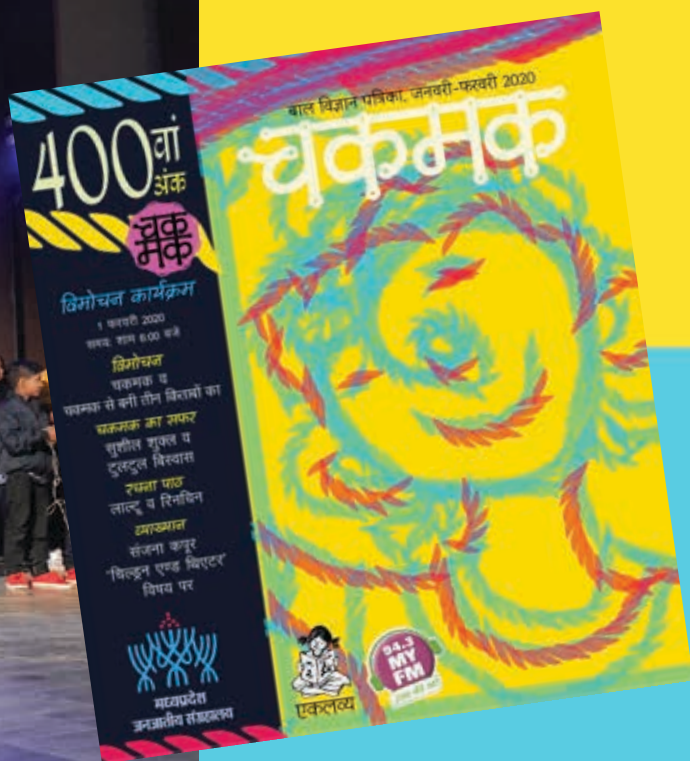
एक कहानी लिखो। कल्पना करो कि तुम और तुम्हारे दोस्त किसी पेड़ के मण्डवा में रहते हो। तुम क्या खाते हो, क्या पीते हो? एक दिन जंगल कट जाता है और उसके अलग-अलग हिस्से बन जाते हैं। आगे क्या होता है? अपनी कहानी और पेड़ की ऊँचाई नापने के अनुभव के बारे में हमें chakmak@eklavya.in पर लिखो और एक किताब जीतने का मौका पाओ।

अनुवाद : विनता विश्वनाथन



चकमक 21
मार्च 2020

400वें चकमक के जश्न की झलकियाँ





चिल्ड्रन और थिएटर



जैसा कि तुमको पता है जनवरी 2020 में चकमक के 400 अंक पूरे हुए। इस खुशी में 1 फरवरी 2020 को हमने भोपाल में जश्न मनाया। इस दिन चकमक के 400 वें अंक के साथ ही चकमक में प्रकाशित माथापच्ची की गतिविधि व तुम्हारी रचनाओं से बनी तीन किताबों का भी विमोचन हुआ। इस मौके पर मशहूर थिएटर कलाकार संजना कपूर ने बच्चों और थिएटर विषय पर बात की। उन्होंने बताया कि कैसे वो अपने नाना-नानी से प्रेरित होकर थिएटर में आईं और यहीं की होकर रह गईं। उनको लगता है कि बच्चों द्वारा थिएटर से बच्चों के लिए थिएटर महत्वपूर्ण है। हमें लगता है कि बच्चे भला क्या आर्ट समझेंगे, लेकिन ऐसा नहीं है बच्चे सब समझते हैं और इसलिए आर्ट को बच्चों के साथ विषय की तरह जोड़ना बहुत ज़रूरी है। उन्होंने इस उम्मीद के साथ अपनी बात खतम करी कि आने वाले समय में बच्चों के लिए थिएटर भारत के हर कोने तक पहुँचेगा।



बाल विज्ञान पत्रिका, चकमक के 400वें अंक का जश्न

1 फरवरी 2020

धमाचोंकड़ी

बाल मेला झलकियाँ

1 फरवरी की सुबह भोपाल के जवाहर बाल भवन में हमने एक बाल मेले का आयोजन किया जिसमें करीब 700 बच्चे शामिल हुए। उन्होंने कहानियाँ सुनीं, मिट्टी के पुतले बनाए, डाँस किया, रंगों से खेला, बालगीत सुने-गाए, विज्ञान के प्रयोग किए, ऑरिगेमी से तरह-तरह की चीज़ें बनाईं, कठपुतलियाँ बनाईं, किताबें पढ़ीं और खेल भी खेले। कुल मिलाकर हम सबने खूब मज़े किए।





फोटो: इशिता देबनाथ बिस्वास, अम्फिया जमाल, दवन्नरा और मोहित

वैज्ञानिक कैसे दिखते होंगे?

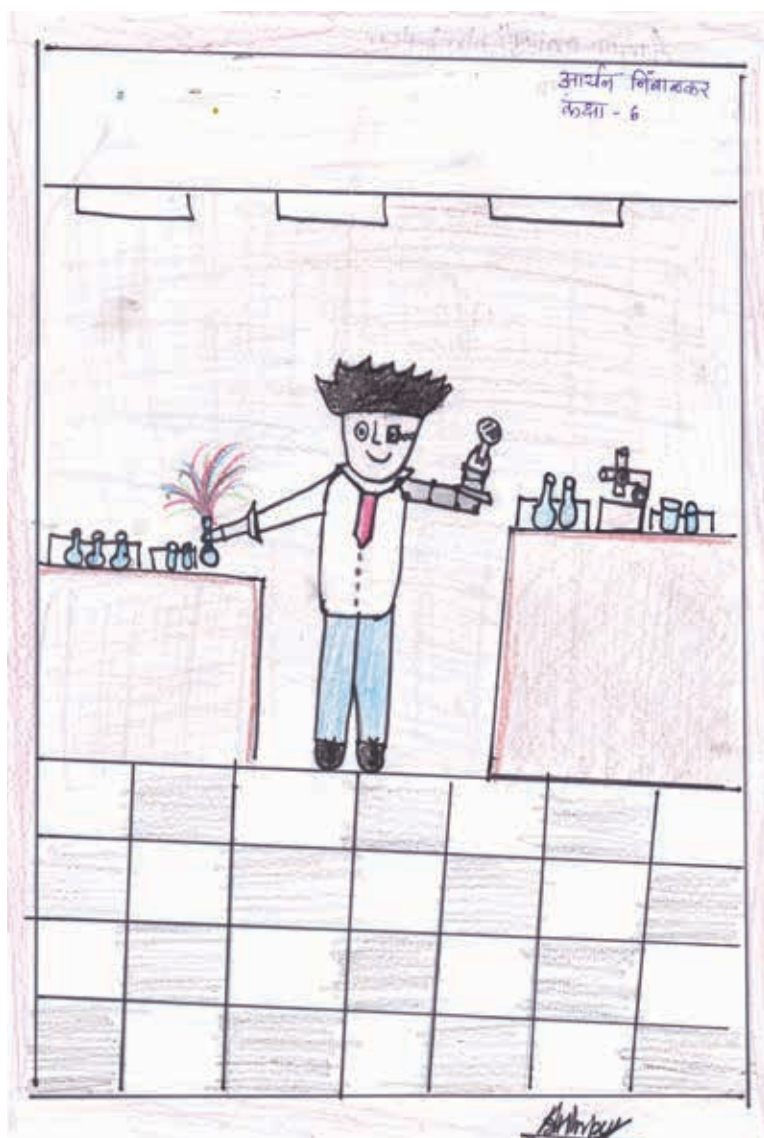
कुछ समय पहले हमने कई बच्चों से पूछा था कि उनकी कल्पना में वैज्ञानिक कैसे दिखते होंगे? वे अपना जवाब चित्र बनाकर या लिखकर भेज सकते थे। उनके जवाब तुम नीचे देख-पढ़ सकते हो।

वैज्ञानिक ऐसे व्यक्ति होते हैं जिनमें अपने काम के प्रति लगन और पागलपन होता है। और उनकी सोच साधारण लोगों से अलग होती है। वो किसी भी बात पर गम्भीरता से चिन्तन करते हैं। बिना एक पल गँवाए और समय का सदुपयोग करते हुए अपने चिन्तन में लगे रहते हैं जब तक कि उन्हें अपने प्रयोग में सफलता ना मिल जाए। वो अपने प्रयोग व चिन्तन में इस तरह लीन हो जाते हैं कि उन्हें अपने शरीर का खयाल भी नहीं रहता। इस कारण उनके बाल बढ़ जाते हैं, कपड़े भी मैले-कुचैले हो जाते हैं।

पल्लवी सिंह, ग्यारहवीं, एमएचएस स्कूल, जीरादेई,
सिवान, बिहार

वैज्ञानिकों को तो हमने बड़े बाल और सफेद कोट में ही देखा है। वैज्ञानिकों को देखकर हँसी आ जाती है क्योंकि उनके बाल खड़े रहते हैं और वो बोलते हैं - ये केमिकल ले आओ - और बस देखते रहते हैं।

अभिषेक सातनकर, सातवीं, शासकीय माध्यमिक शाला,
जाटखेड़ी, भोपाल, मध्य प्रदेश



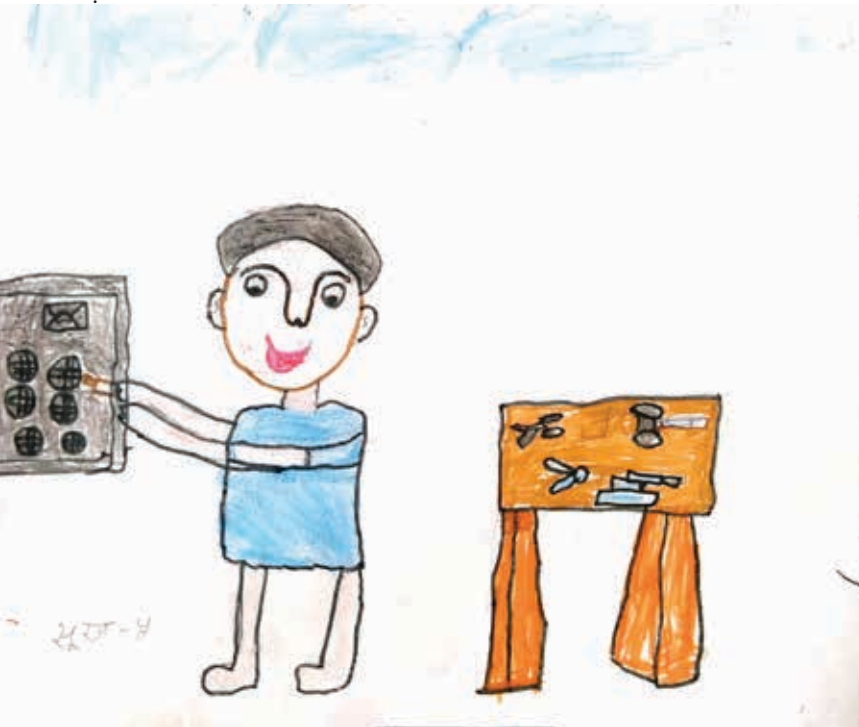
चित्र: आर्यन, कमला निम्बकर बाल भवन, फलटण, सतारा, महाराष्ट्र

वैज्ञानिक एक ऐसा मनुष्य है जो दुनिया में नहीं है। वैज्ञानिक असफल को सफल कर देता है। वैज्ञानिक के चेहरे गोरे-गोरे दिखते हैं क्योंकि वो लोग अपने शरीर को देखते हुए भोजन करते हैं। वैज्ञानिक कोई भी जानवरों से नहीं डरते। पहले वैज्ञानिक के मामले में पुरुषों का नाम आता था लेकिन आज के समय में महिलाएँ भी वैज्ञानिक हैं। महिलाएँ भी सब कुछ कर सकती हैं। एक और बात है कि महिलाएँ वैज्ञानिक, पुलिस आदि बनने के लिए अपनी पूरी ताकत लगाती हैं। लेकिन पुरुष महिलाओं के साथ गन्दा व्यवहार करके महिलाओं को आगे बढ़ने नहीं देते जिसके कारण महिलाएँ वहीं रुक जाती हैं।



चित्र: वैष्णवी, तीसरी, एसडीएमसी स्कूल, हौजखास, दिल्ली

मोहित सिन्हा, सातवीं, अजीम प्रेमजी स्कूल, धमतरी, छत्तीसगढ़



हमारे खयाल में वैज्ञानिक विज्ञान से जुड़ी हुई बातें करता होगा। उसके लम्बे बाल होंगे। वह हर समय प्रयोगशाला में खोज करता रहता होगा। उसे किसी से बात करने का टाइम नहीं मिलता होगा।

कृष्णा, अजीम प्रेमजी स्कूल, मातली, उत्तराखण्ड

चित्र: सूरज, पाँचवीं, प्राथमिक विद्यालय धुसाह - प्रथम, बलरामपुर, उत्तर प्रदेश

वैज्ञानिक वो होते हैं जो साइकिल के दो गोल पहिये जैसे चश्मे लगाते हैं और कुछ भी बेकार बनाते हैं तो लोग उसको आविष्कार समझ लेते हैं। वैज्ञानिक उल्लू जैसे दिखते हैं क्योंकि वो हर चीज़ को घूरते हैं।

शिवांश सोनी, सातवीं, केरला पब्लिक स्कूल, देवास, मध्य प्रदेश

वैज्ञानिक नाम सुनकर मेरे मन में यह आता है कि वह बहुत-से काम करते होंगे। जैसे हमारे गाँव के किसान करते हैं। वह कुछ अलग करते होंगे। वह कैसे-कैसे पढ़ाई किए होंगे। पहले मेरे मन में यह सवाल बार-बार उठता था। और मैंने वैज्ञानिकों के सपने भी देखे हैं। मैं वैज्ञानिक का नाम देखकर चौंक जाती हूँ। वैज्ञानिक ऐसे दिखते होंगे।

मुक्ता रानी, पाँचवीं, अज़ीम प्रेमजी स्कूल, धमतरी, छत्तीसगढ़



वैज्ञानिक ऐसे प्राणी हैं जो दिमाग फाड़कर कुछ भी उठा लाते हैं। और लोगों के सामने रख देते हैं। और लोग इतने पागल होते हैं कि उसको आविष्कार समझ बैठते हैं। वैज्ञानिक अपने आप को फिल्म स्टार समझ लेते हैं। पर वो गधे जैसे दिखते हैं और घमण्डी होते हैं।

आर्यन, सातवीं, केरला पब्लिक स्कूल, देवास, मध्य प्रदेश

मेरी कल्पना में वैज्ञानिक ऐसे होते होंगे शायद, जैसे हमारी कक्षा ने तैरने और डूबने की गतिविधि की थी तो उसमें हम लोग ही वैज्ञानिक थे।

प्रचिता, छठवीं, अज़ीम प्रेमजी स्कूल, मातली, उत्तराखण्ड

वैज्ञानिक के पास एक बड़ी लैब होनी चाहिए। उसके बाल सफेद होने चाहिए। एकाध बाल काला चलेगा। उसके पास इतना ज्ञान होना चाहिए कि एक गोदाम भर जाए। अगर किसी के पास यह है तो वह सच्चा वैज्ञानिक बनने के लायक है।

अमेय मोहिते, सातवीं, कमला निम्बकर बाल भवन, फलटण, सतारा, महाराष्ट्र

चित्र: रितिका कुमारी, ग्यारहवीं, जीरादेई, सिवान, बिहार

वह आम मनुष्य की तरह ही होते हैं, पर वह हर समय किसी गहन सोच में रहते हैं।

मोहित, आठवीं, अजीम प्रेमजी स्कूल, मातली, उत्तराखण्ड

वैज्ञानिक वह होते हैं जो नई-नई खोज करते हैं। वैज्ञानिक की दाढ़ी और मूँछ लम्बी होती हैं। वैज्ञानिक सालों-साल नहीं नहाते और इसलिए उनसे बदबू आती है। और वैज्ञानिक चश्मा लगाते हैं।

मोनू अहिरवार, सातवीं, शासकीय माध्यमिक शाला, जाटखेड़ी, भोपाल, मध्य प्रदेश



चित्र: अमन, प्राथमिक विद्यालय धुसाह प्रथम, बलरामपुर, उत्तर प्रदेश

इन सब जवाबों में से वैज्ञानिकों की एक खास छवि उभरकर आती है - काफी काबिल लोग हैं, कुछ भी कर सकते हैं - रोबोट, शस्त्र इत्यादि बनाते हैं। लैब में लैब कोट पहनकर काम करते हैं (ज़्यादातर रसायन या भूगोल के लैब में), और ज़्यादातर पुरुष होते हैं। इस आखिरी बात ने हमें सोचने पर मजबूर किया। वास्तव में क्या वैज्ञानिक पुरुष ही होते हैं? क्या महिला वैज्ञानिक बहुत कम होती हैं?

पता करने पर समझ में आया कि भारत में हर 100 वैज्ञानिकों में से 15 या 20 महिलाएँ होती हैं। हमें मिले जवाबों से तो यह ज़्यादा है (सिर्फ चित्रों को देखते हैं तो 42 में से चार ही महिला वैज्ञानिक के थे) लेकिन सच्चाई यह है कि विज्ञान, टेक्नोलोजी, इंजीनियरिंग और गणित (STEM विषयों) में महिलाएँ कम ही दिखती हैं। दुनियाभर में स्थिति लगभग यही है।

जब इसका कारण जानने की कोशिश की गई तो समझ में आया कि दिक्कत हमारी सोच में है। हम

समझते हैं कि महिलाएँ कोमल और नाजुक होती हैं, कम काबिल होती हैं और उनको कुछ क्षेत्रों में पढ़ाई व काम नहीं करना चाहिए। सो बचपन से ही हम उन्हें कुछ विषयों को सीखने में मदद कम करते हैं और अक्सर रोकते भी हैं। इस वजह से लड़कियों और महिलाओं में एक झिझक पैदा हुई है कि वास्तव में वे यह सारे काम नहीं कर पाएँगी। उन्हें ऊँचे पदों पर अन्य महिलाएँ भी नहीं दिखती हैं जिनसे वे प्रेरित हो सकें। अपने कामों के बारे में बात करते समय कई दफा कुछ पुरुष ज़्यादा भड़कीले शब्दों का इस्तेमाल करते हैं, बढ़ा-चढ़ाकर बात करते हैं। इससे इनके कामों को लोग ज़्यादा सुनते हैं, उनको ज़्यादा पैसे देते हैं और वे तेज़ी-से उन्नति करते हैं।

सच तो यह है कि ध्यान से देखने पर पुरुषों और महिलाओं के कामों में कोई अन्तर नहीं पाया गया है। यानी मामला सिर्फ हमारी संस्कृति व सोच का है। इसे बदलने पर वैज्ञानिकों के बारे में सोचते समय शायद हमारे मन में किसी महिला की छवि बनेगी।

मक

I Love you

गायत्री
चित्र: समिधा गुंजल

पिछले साल गर्मियों की बात है। मैं बाल पुस्तकालय में कुछ बच्चों के साथ किताबें जमा रही थी। तभी छह से आठ साल की उम्र की पाँच लड़कियाँ मेरे पास आईं। कुछ हलके-हलके शर्माते हुए मुस्करा रही थीं और आपस में खुसुर-पुसुर कर रही थीं - तुम बताओ, तुम बताओ। आखिर मैंने पूछ ही लिया, “क्या हो गया, कुछ बताओ भी तो सही।”

तब उनमें से एक बोली, “मैडम-मैडम! आप बाहर तो चलो।”

मैं बाहर गई। एक बच्ची ने इशारा करके बताया कि देखो मैडम, दीवार पर क्या लिखा है?

दीवार पर किसी बच्चे ने क्रेयान से लिखा था - I Love u। मैंने इसका मतलब पूछा तो एक लड़की ने बताया, “मैडम! अब्बे एक मोड़ा लिखकर भगो हे।” “इसमें हँसने, शर्माने जैसा या बुरा क्या है?” मेरे यह पूछने पर आठ साल की एक बच्ची बोली, “मैडम! अच्छा तो है लेकिन दीवार पर नहीं लिखना चाहिए ना। यहाँ सब लोग पढ़ते हैं तो अच्छा नहीं लगता।”

दूसरी लड़की बोली, “कोई सोचेगा पता नहीं किसके लिए लिखा है। यहाँ तो बहुत-सी लड़कियाँ आती हैं। हमारी मम्मी आएँगी और पढ़ेंगी तो बहुत बुरा मानेंगी और हमारा तो पुस्तकालय में आना ही बन्द करवा देंगी। बोलेंगी वहाँ तो दीवारों पर गन्दा-गन्दा लिखा होता है।”

मैंने कहा, “I Love you तो हमें भाई-बहन, मम्मी-पापा, दादा-दादी आदि परिवार के

लोग भी बोलते हैं।” तभी शर्माते हुए एक लड़की बोली, “मैडम परिवार के लोग बोलें तो बुरा नहीं लगता, लेकिन कोई लड़का बोले तो बुरा लगता है।” फिर हम सब प्यार मतलब क्या इस बारे में बात करने लगे। एक लड़की ने कहा, “मैडम! लड़के अगर बोलें कि हम तुमको प्यार करते हैं तो उन्हें पीट देना चाहिए। स्कूल में हमको कोई लड़का परेशान करता है तो हम मैडम को बता देते हैं। मैडम बोलती हैं तुम खुद ही जाकर पीट दो। तुम पीटोगी तो उसको शर्म महसूस होगी। अफसोस होगा कि एक लड़की ने पीटा है। हम तो पीट देते हैं मैडम।” दूसरी ने कहा, “लड़कों का प्यार तभी तक रहता है जब हम उनसे मिलते हैं, उनके मन की करते हैं। मम्मी-पापा का प्यार हमेशा रहता है वे हमारा भला चाहते हैं।”

तब तक और भी बच्चे आ चुके थे। मैंने सबसे पूछा, “तुम्हें क्या लगता है प्यार किस उम्र में होता है?”

एक 12 साल के लड़के का जवाब था, “मैडम कभी भी हो सकता है। किसी को जल्दी तो किसी को देर से होता है। किसी को 15 से 18 साल के बीच होता है। लेकिन मम्मी-पापा बोलते हैं कि प्यार नौकरी लगने के बाद ही करना चाहिए वरना करियर खतम हो जाता है। यह सही है क्या मैडम?” मैंने कहा, “ऐसा कुछ नहीं होता वह तो लड़का-लड़की दोनों पर निर्भर करता है। दुनिया में ऐसे कई उदाहरण देखने-सुनने को मिलते हैं जहाँ किसी लड़के ने लड़की की और लड़की ने लड़के की ज़िन्दगी बना

“मैडम!
अबबे एक मोड़ा
लिखकर भगो
हे।”





दी हो।” कुछ लड़कियों का कहना था प्यार तो 18 साल के बाद ही होता है। एक लड़की 12 साल की एक लड़की की तरफ इशारा करते हुए बोली, “मैडम इसको तो अभी से हो गया, देखो कैसे मुस्करा रही है।” एक लड़की कहने लगी कि मम्मी-पापा राज़ी नहीं हों तब तक प्यार किसी से करना भी नहीं चाहिए। मम्मी-पापा भले ही हमको डाँटे-मारें हमको उनकी बात सुननी चाहिए क्योंकि हमारे साथ कुछ भी बुरा होने पर उनको ही दुख होता है। एक दूसरी लड़की उसकी बात का जवाब देते हुए बोली, “अच्छा तुम्हारे मम्मी-पापा राज़ी नहीं होंगे तब तक बैठे रहना तुम अकेले घर में, बिना शादी के।”

एक 10 साल की लड़की जो अभी तक हमारी बातचीत सुन रही थी अचानक ही बोल पड़ी, “मैडम मुझे अगर कोई I Love you बोल दे और मैं मम्मी को बता दूँ तो मेरी मम्मी तो लड़ने पहुँच जाएँगी उस लड़के के घर। लड़के पहले I Love you बोलते हैं, फिर पीछे पड़ जाते हैं। हम कहीं भी बाहर जाएँ तो पीछा करते हैं, ताने मारते हैं। कोई लड़का हमारी पहचान का हो, साथ में पढ़ता हो, हमारी मदद करता हो और वह अगर I Love you बोले तो बुरा नहीं लगेगा।” तभी एक 12 साल के लड़के ने पूछा, “मैडम हमको बार-बार किसी को देखने की इच्छा होती है उसी को प्यार बोलते हैं ना?”

मैंने अपने अनुभव से कहा, “हाँ, बार-बार देखने की इच्छा होना, उसी के बारे में सोचना, उसकी बातें सुनना अच्छा लगना, उसकी चिन्ता करना, उसके साथ अधिक से अधिक समय बिताना अच्छा लगना यही प्यार है।”

एक 10 साल की लड़की ने कहा, “मुझे अगर कोई लड़का I Love you बोले तो मैं साफ मना कर दूँगी और बोलूँगी निकल जा भाई तू यहाँ से, सिर फिर गया क्या तेरा। मेरी क्लास में एक लड़का है। बहुत शरारती है। लंच ब्रेक में हम टिफिन खोलते हैं तो वह पीछे से आकर हमारा टिफिन छुड़ा ले जाता है। हम उसको चूहा कहकर बुलाते हैं लेकिन भई प्यार-व्यार, रोमांस जिसको कहते हैं वह तो नहीं करता है वह।”

मैंने सोचा आज प्यार की बात हो ही रही है तो इनको कॉन्ताँ ग्रेबाँ की कहानी ‘बरास्ता तरबूज़’ सुनाई जाए। इस कहानी में सासो नाम के एक दस-बारह साल के लड़के को एक लड़की से पहली ही नज़र में प्यार हो जाता है। उससे मिलने के लिए वह बहुत बेताब रहता है। और उसके लिए तरबूज़ लेकर उससे मिलने निकल पड़ता है। पूरे रास्ते वह सिर्फ उस लड़की के बारे में ही ख्वाब बुनते रहता है।

बच्चों को कहानी में बहुत मज़ा आया। सुनते समय उनको बड़ी शर्म भी आ रही थी। वो एक-दूसरे को इशारे कर रही थीं। एक ने कहा, “प्यार अभी भी हो सकता है।” तो दूसरी बोली, “मैडम! सासो गलत सोच रहा है कि लड़कियाँ खाऊ होती हैं, देखो आखिर में क्या हुआ। सासो के सारे तरबूज़ तो खतम हो गए थे। उस लड़की को तो सिर्फ बीज मिले तरबूज़ के, फिर भी वह कितनी खुश हुई। इसलिए लड़कियाँ खाऊ नहीं होतीं बल्कि लड़के खाऊ होते हैं।”

प्यार के बारे में जानने-समझने का यह शायद एक अच्छा ज़रिया था। उस दिन हमने सासो व प्यार के बारे में और भी कई सारी बातें कीं। पर, उनके बारे में बात फिर कभी...



मेरा पेन्ना



चित्र: द्युति, छह वर्ष, किड ज़ोन प्रीस्कूल, बलारामपुर, उत्तर प्रदेश

साँड और स्कूटी की टक्कर

हर्षिता कौशले, देवास, मध्य प्रदेश

देवास में कल शाम दो लड़कियों ईशा और प्राची की साँड से भिड़न्त हो गई। दोनों का कहना है कि कल शाम अपना निजी काम पूरा करके वे अपने घर लौट रही थीं। तभी हनुमान मन्दिर के मोड़ से थोड़ा आगे जाकर उनकी गाड़ी के सामने एक साँड आ गया। उनकी गाड़ी के ब्रेक नहीं लगे और वो असन्तुलित होकर उस साँड से जा टकराए। और दोनों ज़मीन पर गिर गए। वो ज़मीन पर गिरे हुए सोच रहे थे कि कोई आकर हमें उठाए। और लोग हँस रहे थे।

जम्बो की कहानी

चित्र व कहानी: रुचिता हेमन्त घनवट
प्रगत शिक्षण संस्थान,
फलटण, सतारा, महाराष्ट्र

एक बड़ा-सा जंगल था। वहाँ पर हाथी का एक झुण्ड रहता था। उसमें एक हाथी का बच्चा भी था। उसका नाम जम्बो था। वह बहुत खेल करता था। खेलते-खेलते वो बहुत दूर चला गया। वहाँ खो गया। उसे उसकी माँ की बहुत याद आ रही थी। उसकी माँ को भी उसकी बहुत याद आ रही थी। दूसरे दिन वो रोते-रोते एक तालाब के पास जा बैठा। और बहुत ज़ोरों-से रोने लगा। तभी अचानक जंगल के पास से शेर की आवाज़ आने लग गई। यह सुनकर जम्बो डर गया और ज़्यादा ज़ोर-से रोने लगा। आवाज़ सुनकर शेर जम्बो के करीब आ गया। जम्बो डर गया तभी उसकी माँ जम्बो को बचाने वहाँ आ गई। जम्बो की माँ ने शेर को भगा दिया और जम्बो को गले लगा लिया।



मेरा
प्रेम

हमारे पड़ोसवाले चाचा

नूतन सूर्यवंशी
छठवीं, प्रगत शिक्षण संस्थान
फलटण, सतारा, महाराष्ट्र

हमारे पड़ोस में एक चाचा रहते थे। उनकी पत्नी उन्हें कभी भी दूध पीने नहीं देती थीं, क्योंकि वे दूध पीने लगते तो सारा दूध खतम कर जाते। उनके पास दो गाय थीं। वे हमें रोज़ एक लीटर दूध देते थे। एक दिन वे हमें दूध देने आ ही रहे थे कि पत्थर से टकराकर गिर गए और सारा दूध उनके सिर पर गिर गया। वे मुँह पर गिरा हुआ दूध चाटने लगे। बहुत दिनों के बाद उन्हें दूध पीने का चाँस जो मिला था।



चित्र: सौरभ, चौथी

मेक

एक दिन मैं और मेरे परिवार की सब लड़कियाँ और औरतें बाहर घूमने जा रहे थे। जिस जगह जा रहे थे, उस जगह का नाम था हार्टमैन। हम सब लोगों ने मिलकर एक ऑटो किया। हम ऑटो में बैठ गए। ऑटोवाले ने ऑटो चलाना शुरू किया। ऑटो चलाते हुए जब वह एक मन्दिर के पास पहुँचा तो उसने एक सुनसान जगह पर ऑटो रोका। हमें डर लग रहा था कि उस व्यक्ति ने ऐसी जगह ऑटो क्यों रोका। फिर अम्मी ने कहा कि तुमने ऑटो यहाँ क्यों रोका तो उसने कहा मुझे कुछ सामान लेना है। वो सामान लेने चला गया और हम बहुत देर तक रास्ता देखते रहे। फिर वो आया और ऑटो लेकर चलने लगा। थोड़ी दूर पर जंगल पड़ा। जंगल में अँधेरा था। जब जंगल पड़ा तो हमें लगा कि यह रास्ता गलत है और ऑटोवाला हमें झूठ बोलकर कहीं ले जा रहा है। फिर हम सब मिलकर चलते ऑटो से कूद गए और उस व्यक्ति से बचे। पर वो दिन अब तक हम सबको याद है। फिर एक आदमी से हम सबने हार्टमैन का रास्ता पूछा और उसने हमें सही रास्ता बताया।

वो दिन
याद रहा...

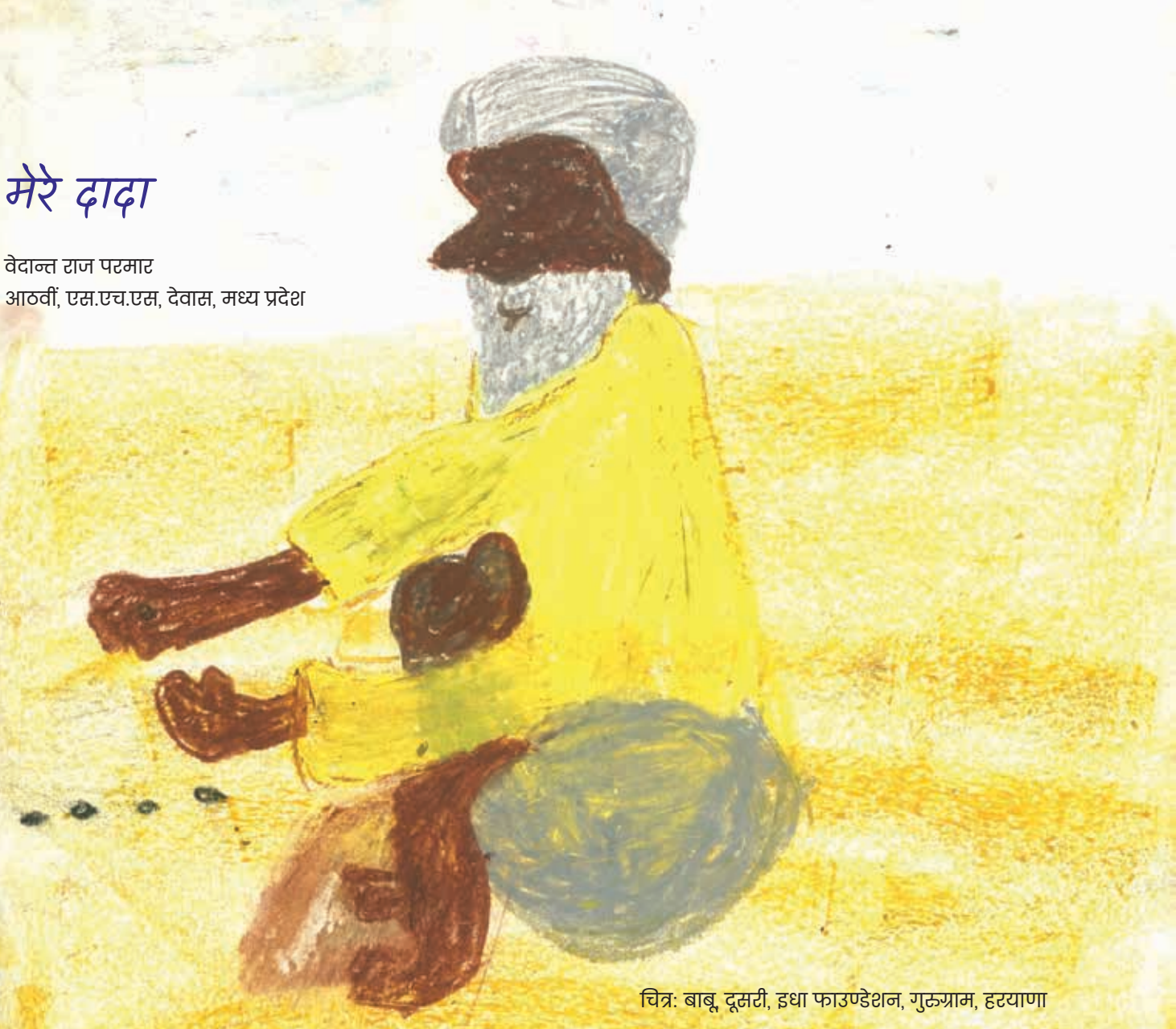
अनाम,
निरन्तर संस्था, बरेली
सेंटर, उत्तर प्रदेश

मेक

मेरे दादा

वेदान्त राज परमार

आठवीं, एस.एच.एस, देवास, मध्य प्रदेश



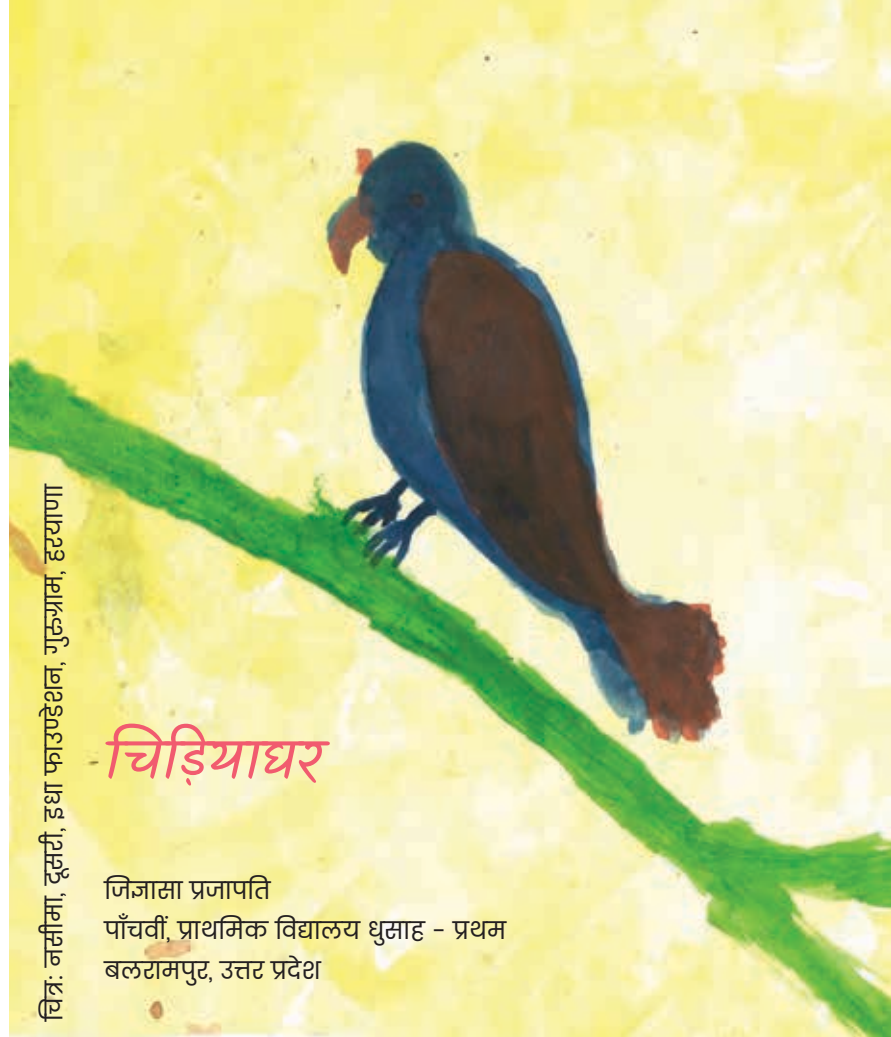
चित्र: बाबू, दूसरी, इधा फाउण्डेशन, गुरुग्राम, हरयाणा

नमस्ते! मेरा नाम वेदान्त है। मैं आठवीं में पढ़ता हूँ। मैं रोज़ एकलव्य जाता हूँ। मैं वहाँ से रोज़ कुछ ना कुछ सीखता हूँ। चलो मैं तुम्हें मेरे घर के बारे में बताता हूँ। मेरे घर में मेरे पापा, माँ, नानी, भाई, और दादा रहते हैं।

पता है मेरे दादा को दिखाई नहीं देता था। लेकिन मेरे दादा बहुत अच्छे थे। मेरे दादा का जन्मदिन जन्माष्टमी को आता था। इस साल उनका जन्मदिन आखिरी जन्मदिन था। ऐसी उनकी हालत हो गई थी। उन्होंने खाना भी छोड़ दिया था लेकिन हम उनकी देखभाल किया करते थे।

लेकिन एक दिन ऐसा आया कि मैं नानी, भाई हम हॉल में बैठे थे। पापा काम से घर आए, मम्मी खाने के बरतन साफ कर रही थीं। पापा दादा के पास गए। दादा ने बोला कि मुझे पानी पीना है तो पापा ने पानी पिलाया और चले गए। मम्मी बरतन साफ करके आई तो दादा कुछ बोलना चाहते थे। लेकिन बोल नहीं पाए तो मम्मी को लगा कि पानी का बोल रहे होंगे। तो मम्मी ने पानी पिलाया और दादा का मुँह चिड़िया की तरह फटा रह गया। फिर मम्मी ने नानी को बुलाया कि नानी, दादा को देखो। कुछ बोल नहीं रहे हैं। मम्मी को

विश्वास नहीं हुआ तो मेरे काका-काकी को बुलाया। तो उन्होंने कहा कि दादा मर गए। यह सुनकर मम्मी को तो चक्कर आ गए। फिर उनको हॉल में लाए तो मुझे रोना आ गया। मैंने सबको फोन लगाया। रात हो गई थी। मेरी बुआ और बड़े पापा, बड़ी मम्मी आ गए। दादी, चाची और सारी बुआ भी आ गईं। फिर उनको हमने आगे के हॉल में लिटा दिया। फिर पूरी रात हमने निकाल ली। जैसे-तैसे सुबह हुई। फिर सब आ गए। मैं दादा के पास बैठा था तो मुझे बाहर बिठा दिया और सब औरतें रोने लगीं। फिर मेरे दादा को ले जाने वाले थे तो बारिश आ गई। फिर बारिश बन्द हो गई तो दादा को तैयार किया और बड़े पापा ने उनको उठाया तो सब फिर से रोने लगे और उनको बाहर लेकर आए और पटिये पर लेटा दिया। मुझे रोना आया और मैं चक्कर खा कर गिर गया तो पापा के एक दोस्त ने मुझे उठाया और पानी पिलाया। फिर सारी औरतें भी बाहर आ गईं। दादा को ले जाने लगे तो मम्मी दादा को ले जाने के लिए मना कर रही थीं। फिर मम्मी को बुआ ने पकड़ा और दादा को ले गए। मैंने तो कभी भी श्मशान नहीं देखा था। मुझे भी साथ में ले गए। वहाँ पहुँचकर दादा को वहाँ पर लेटा दिया और दादा को घी लगाया और उनके ऊपर लकड़ियाँ रखकर उन्हें जला दिया। फिर वहाँ से हम सब घर की ओर निकल लिए। घर आए तो दादा की फोटो के पास मैं बैठी मम्मी रो रही थीं। फिर हम सबने नहाया और सब दादा को वहीं छोड़कर आ गए।



चित्र: नसीमा, दूसरी, इधा फाउण्डेशन, गुरुग्राम, हरयाणा

चिड़ियाघर

जिज्ञासा प्रजापति
पाँचवीं, प्राथमिक विद्यालय धुसाह - प्रथम
बलरामपुर, उत्तर प्रदेश

मैंने देखा एक चिड़ियाघर
डाल पर बैठे हुक्कु बन्दर
उछल-कूदकर शोर मचाते
सब लोगों का दिल बहलाते

मैंने देखा एक चिड़ियाघर
शेर को पिंजड़े के अन्दर
जो जंगल का राजा कहलाता
बन्द हुआ कैसे पछताता

मैंने देखा एक चिड़ियाघर
कई साँप और मोटे अजगर
जिन्हें देखकर लगता डर
आज पड़े शीशे के अन्दर



फॉर्म-4 (नियम-8 देखिए)

मासिक चकमक बाल विज्ञान पत्रिका के स्वामित्व और अन्य तथ्यों के सम्बन्ध में जानकारी

प्रकाशन का स्थान : भोपाल

प्रकाशन की अवधि : मासिक

प्रकाशक का नाम: अरविन्द सरदाना

राष्ट्रीयता : भारतीय

पता : एकलव्य

ई-10 शंकर नगर, बी.डी.ए. कॉलोनी

शिवाजी नगर, भोपाल 462 016

मुद्रक का नाम: अरविन्द सरदाना

राष्ट्रीयता : भारतीय

पता : एकलव्य

ई-10 शंकर नगर, बी.डी.ए. कॉलोनी

शिवाजी नगर, भोपाल 462 016

सम्पादक का नाम : विनता विश्वनाथन

राष्ट्रीयता : भारतीय

पता : एकलव्य

ई-10 शंकर नगर, बी.डी.ए. कॉलोनी

शिवाजी नगर, भोपाल 462 016

उन व्यक्तियों के नाम

जिनका स्वामित्व है : रैक्स डी. रोज़ारियो

राष्ट्रीयता : भारतीय

पता : एकलव्य

ई-10 शंकर नगर, बी.डी.ए. कॉलोनी

शिवाजी नगर, भोपाल 462 016

मैं अरविन्द सरदाना यह घोषणा करता हूँ कि मेरी अधिकतम जानकारी एवं विश्वास के अनुसार ऊपर दिए गए विवरण सत्य हैं।

(प्रकाशक के हस्ताक्षर)

अरविन्द सरदाना 29 फरवरी 2020



तुम्हारी अपनी रचनाओं से सजी किताबें

चकमक के खज़ाने में से बनी तीन किताबें। 34 सालों से मेरा पन्ना में छपी सामग्री और गतिविधियाँ इनमें शामिल हैं।

तीस की मुर्गी बीस में बच्चों की लिखी कहानियों-किस्सों व चित्रों का संकलन है।

मेरा खच्चर डण्डा है कविताओं व चित्रों का संकलन है।

भूलभुलैया माथापच्ची गतिविधियों व चित्रों का संकलन है।

इन किताबों को मँगाने के लिए तुम चकमक के पते पर लिख सकते हो, हमें फोन कर सकते हो या ऑनलाइन भी ऑर्डर कर सकते हो।

www.pitarakart.in

माथी पक्षी



1. 3 चींटियाँ एक साथ जा रही थीं। आगे वाली चींटी बोली, “मेरे पीछे 2 चींटी हैं।” पीछे वाली चींटी बोली, “मेरे आगे 2 चींटी हैं।” पर बीच वाली चींटी बोली, “मेरे आगे भी 2 चींटी हैं और पीछे भी 2 चींटी हैं।” यह कैसे हो सकता है?

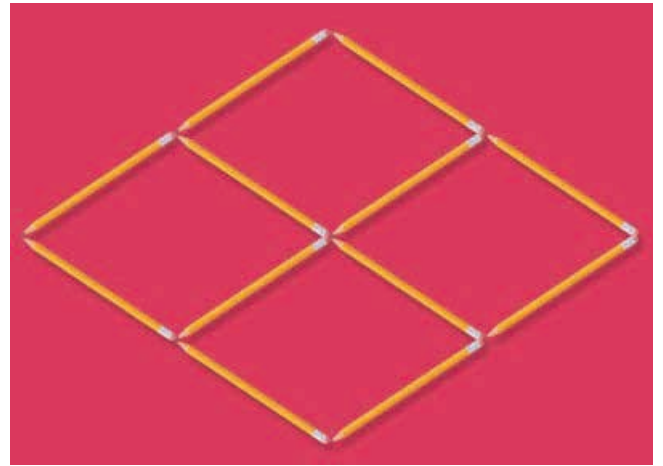
3. एक बार एक आदमी ने पुलिस को बताया कि मेरी बहुत ही कीमती घड़ी चोरी हो गई है। जब मैं रात में घर पर काम कर रहा था तभी अचानक लाइट चली गई। मैं मोमबत्ती जला रहा था कि तभी अचानक दरवाज़े की घण्टी बजी। दरवाज़ा खोलकर देखा तो आसपास कोई नहीं था। और वापिस आकर क्या देखता हूँ कि मेरी बेशकीमती घड़ी चोरी हो गई है। पुलिस ने सारी बात ध्यान से सुनी और तुरन्त समझ गई कि वह आदमी झूठ बोल रहा है। पुलिस को ऐसा क्यों लगा?

5. अयान इंटरव्यू के लिए गया तो इंटरव्यू लेने वाले व्यक्ति ने उसे कहा कि ब्लैक मार्कर उठाकर व्हाइट बोर्ड पर कुछ लिखो। बताओ उसने क्या लिखा होगा?

6. दो अक्षर का एक ऐसा शब्द है जिसमें यदि दो अक्षर और जोड़ दें तो वह कम हो जाता है। कौन-सा शब्द है वो?

2. क्या तुम केवल देखकर इस जानवर को पहचान सकते हो?

4. क्या तुम 4 पेंसिलों को इधर-उधर करके 6 ऐसे तिकोन बना सकते हो जो एक-दूसरे से सटे हुए हों?



7. एक ऐसा सवाल है जिसका जवाब हमेशा बदलता रहता है, तुम्हें पता है वो?

8. खाली पेट तुम कितने केले खा सकते हो?

फटाफट बताओ

खड़ा द्वार पर ऐसा घोड़ा,
जिसने चाहा पेट मरोड़ा
(ललाट)

छोटा है पर बड़ा कहाए,
सफेद तालाब में गोते लगाए
(इच्छिड)

मामाजी के नौ सौ गाय,
रात चराए, दिन बाँध दी जाएँ
(शॉक)



5	9	2	3	7	4	1
		4	8	5	6	
6	4		5	3		
3			1		9	
	2		6		3	4
	6	3	2	8		5
2			4	9	6	1
			2	3		5
1	5		7	4	2	

सुडोकू-28

दिए हुए बॉक्स में 1 से 9 तक के अंक भरना। आसान लग रहा है न? पर ये अंक ऐसे ही नहीं भरने हैं। अंक भरते समय तुम्हें यह ध्यान रखना है कि 1 से 9 तक के अंक एक ही पंक्ति और स्तम्भ में दोहराए न जाएँ। साथ ही साथ, बॉक्स में तुमको नौ डब्बे दिख रहे होंगे। ध्यान रहे कि उन डब्बों में भी 1 से 9 तक के अंक दुबारा न आएँ। कठिन नहीं है, करके तो देखो। जवाब तुमको अगले अंक में मिल जाएगा।



11



22

16



9

1



30

12

चित्र पहेली



बाएँ से दाएँ



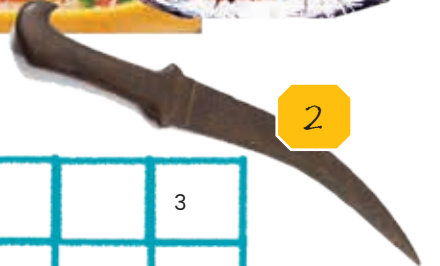
ऊपर से नीचे



2



27



2



9



23



18



6



13



25



27



तुम भी
जानो

बैटरी पर चलने वाला प्लेन

पेट्रोल-डीज़ल पर हमारी निर्भरता कम करना बहुत ज़रूरी है क्योंकि ये ईंधन सीमित मात्रा में उपलब्ध हैं। और इनके जलने से पर्यावरण को नुकसान भी पहुँचता है। जब बिजली से चलने वाली गाड़ियों का आविष्कार हुआ तो यह हमारे लिए काफी उम्मीद की बात थी। और अब हम हवाईजहाज़ को भी बिजली यानी कि बैटरी से चला सकते हैं। हवाईजहाज़ पर्यावरण को सबसे ज़्यादा नुकसान पहुँचाने वाले वाहन हैं। हालाँकि बैटरी से चलने वाले ये जहाज़ अभी केवल 6-9 लोगों को बिठा सकते हैं। और एक बार में लगभग 1000 किलोमीटर की दूरी तय कर सकते हैं। फिर इन्हें ज़मीन पर उतरकर अपनी बैटरी चार्ज करना होगा। कुछ ही दिनों पहले कनाडा में ऐसे ही एक प्लेन ने अपनी पहली उड़ान भरी। यह उड़ान 15 मिनट की थी। 15 मिनट में उतनी दूरी तो तय की जा सकती है, जितनी कि तुम रोड पर 1 घण्टे में तय कर सकते हो। अभी 1-2 महीने और लगेगे इस जहाज़ को सुरक्षित घोषित करने में। लेकिन लोग काफी उत्साहित हैं कि यह टेक्नोलोजी भविष्य में बेहतर और सस्ती बनेगी और हम जीवाश्म ईंधनों पर अपनी निर्भरता कम कर पाएँगे।



हम ठण्डे हो रहे हैं

यह तो तुम जानते ही हो कि हमारे शरीर का सामान्य तापमान लगभग 37 डिग्री सेल्सियस होता है। हर व्यक्ति का तापमान इसके आसपास ही रहता है। यदि बढ़ जाए तो बुखार हो जाता है। कुछ समय पहले अमेरिका में एक अध्ययन में लोगों का औसत तापमान नापा गया। पिछली सदी के आँकड़ों से तुलना करने पर समझ आया कि 1800 के शुरुआती दशकों की तुलना में आज के पुरुषों के शरीर का तापमान 0.59 डिग्री सेल्सियस कम हुआ है। महिलाओं के इतने पुराने आँकड़े तो उन्हें मिले नहीं, लेकिन 1890 से अब तक महिलाओं के शरीर का तापमान भी 0.32 डिग्री

सेल्सियस कम हुआ है। चूँकि 1800 के और आज के थर्मामीटर में भी काफी अन्तर है, इसलिए यदि 1960 से तापमान देखें तब भी हमें पता चलता है कि हर दशक में अमेरिकी लोगों के शरीर 0.03 डिग्री सेल्सियस से ठण्डे हुए हैं। अब इनके शरीर का औसतन तापमान 37 नहीं, 36.6 डिग्री सेल्सियस है।

यह ज़रूर है कि बुजुर्गों के शरीर का तापमान युवाओं से ज़्यादा होता है। इन बदवालों के कारणों का हम सिर्फ अनुमान लगा सकते हैं। अब देखना यह है कि अन्य देशों में भी यही पैटर्न दिख रहा है या नहीं।



माथ्या पक्षी जवाब

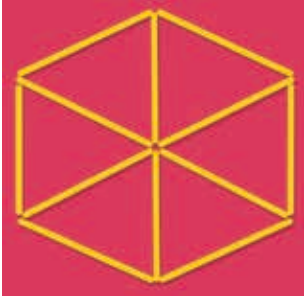
1. हो सकता है, क्योंकि चींटियाँ गोल-गोल घूम रही थीं।

2.



3. उस आदमी ने कहा कि लाइट चली गई थी और तभी दरवाज़े की घण्टी बजी। जब लाइट चली गई थी तो दरवाज़े की घण्टी कैसे बज सकती है। इसलिए पुलिस समझ गई कि वह झूठ बोल रहा है।

4.



5.

इंटरव्यू लेने वाले ने कुछ लिखने को कहा था तो उसने 'कुछ' ही लिखा होगा ना।

6.

कम। क्योंकि 'कम' में 'तर' जोड़ने पर 'कमतर' हो जाता है जिसका मतलब होता है 'और भी कम'।

7.

समय क्या हुआ है

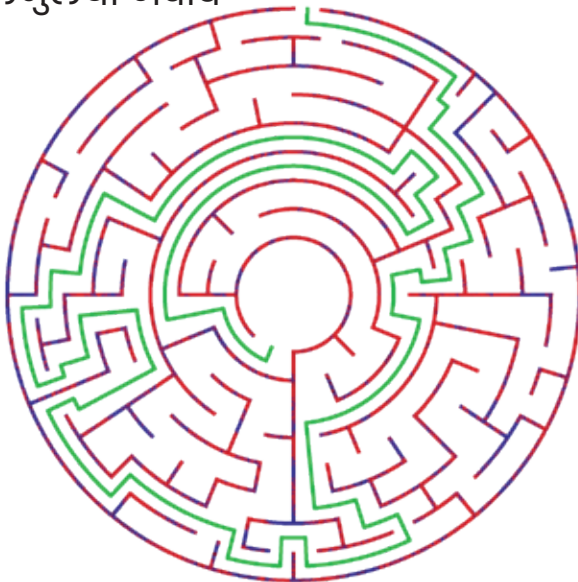
8.

केवल 1, क्योंकि उसके बाद तुम खाली पेट थोड़े ही रहोगे।

सुडोकू-27 का जवाब

9	5	8	1	2	6	7	4	3
2	3	4	5	7	8	9	1	6
7	1	6	9	4	3	5	2	8
5	7	9	2	8	4	6	3	1
8	6	1	3	5	7	4	9	2
4	2	3	6	1	9	8	5	7
3	8	7	4	9	1	2	6	5
6	4	2	8	3	5	1	7	9
1	9	5	7	6	2	3	8	4

भूलभुलैया जवाब



फहीम अहमद
चित्र: प्रशान्त सोनी

मुर्गी नानी

मुर्गी नानी के घर पहुँचे
चच्चा अल्लादीन।
बोले नानी मुझको दे दो
ताज़े अण्डे तीन।

मुर्गी नानी बोलीं हँसकर
ले लो अण्डे चार।
लेकिन दाम चुकाओ फौरन
दूँगी नहीं उधार।

चित्रकार एवं मुद्रक अरविन्द सरदाना द्वारा स्वामी रेक्स डी रोज़ारियो के लिए एकलव्य, ई-10, शंकर नगर, 61/2 बस स्टॉप के पास, भोपाल 462016, म. प्र.
सिक्क प्रिन्ट प्रा. लि. प्लॉट नम्बर 15-बी, गोविन्दपुरा इण्डस्ट्रियल एरिया, गोविन्दपुरा, भोपाल - 462021 (फोन: 0755 - 2687589) से मुद्रित।
सम्पादक: विनता विश्वनाथन